एचएलएल

समन्वया

अंक - 36, मार्च 2024

60%
तक की छूट

- विश्वसनीय और किफायती निवारक स्वास्थ्य रक्षा सेवाएं
- प्रयोगशाला परीक्षणों का पूरा स्पेक्ट्रम (नियमित और विशेषता दोनों)
- 24 X 7 सेवा
- नवीनतम प्रयोगशाला उपकरण और तकनीक
- टेली रेडियोलॉजी सुविधा
- निःशुल्क नैदानिक कार्यक्रमों पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ सुनिश्चित करता है
- प्रमुख हवाई अड्डों पर कोविड़ परीक्षण/स्क्रीनिंग सुविधा

देखें / www.hindlabs.in

NABL
ACCREDITED LABORATORY

हिंदलैब्स
नैदानिक केन्द्र
एचएलएल की एक पहल, भारत सरकार का उद्यम

विषय-सूची

हिंदी दिवस का संदेश	4
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश	7
संपादकीय	8
नराकास राजभाषा सम्मान	9
एचएलएल में राजभाषा कार्यान्वयन - एक नज़र	10
आदर - सम्मान	29
एचएलएल के प्रयाण की ओर एक झलक	30
एचएलएल - समाचार	37
एचएलएल रिक्रियेशन क्लब	43
सृजनशीलता	45
नेमी टिप्पणियाँ	55
एचएलएल शब्दावली	56

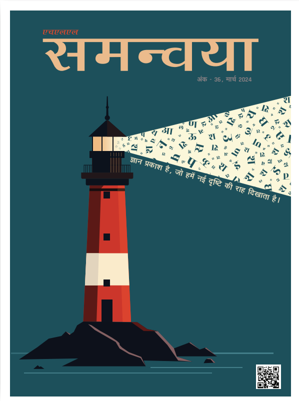

अंक 36, मार्च 2024

संरक्षक के.बेजी जोर्ज आई आर टी एस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
मुख्य संपादक डॉ. रॉय सेबास्टियन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) प्रभारी
संपादक डॉ. सुरेष कुमार. आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
संपादकीय सहायक आशा.एम, शालिनी.एस.एस, मीना.एम.वी, लीना.एल, लक्ष्मी सुदर्शनन
संपादक मंडल डॉ.एस.एम.उण्णिकृष्णन उपाध्यक्ष (आई बी डी, एस पी & सी सी), श्रीमती सुधा एस नायर, उप महा प्रबंधक (कॉर्पोरेट संचार)
डिजाइनिंग श्रीजित.एस.एल, (कॉर्पोरेट संचार), **डिज़ाइनिंग सहायक** श्री अलन जॉयल
मुद्रक अक्षरा ऑफसेट प्रिंटेर्स, तिरुवनंतपुरम।

संपादित एवं प्रकाशित (केवल मुफ्त परिचालनार्थ) हिंदी विभाग, एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड, निगमित एवं पंजीकृत कार्यालय, पूजप्पुरा, तिरुवनंतपुरम - 695 012, केरल, दूरभाष: 2354949.
वेब: www.lifecarehll.com **फैक्स:** 0471-2358890

समन्वया में प्रकाशित लेखों में निहित विचार लेखकों के अपने हैं, इससे एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड का कोई संबंध नहीं है।

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

डॉ. मनसुख मांडविया
DR. MANSUKH MANDAVIYA

सत्यमेव जयते

मंत्री
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
व रसायन एवं उर्वरक
भारत सरकार
Minister
Health & Family Welfare
and Chemicals & Fertilizers
Government of India

संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को मेरी शुभकामनाएं।

भाषा किसी भी राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का एक सशक्त माध्यम होती है। यह न केवल भावों, विचारों और संवेदनाओं को अभिव्यक्त करती है, बल्कि किसी देश की सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर की संवाहिका भी होती है। हिंदी देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है, जिसकी अपनी एक सुदीर्घ–सामाजिक और समावेशी परंपरा रही है। पिछले कुछ वर्षों से न सिर्फ़ देश के भीतर बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों और विश्व स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ी है।

कदाचित हिंदी की इसी विशिष्टता को देखते हुए संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को स्वाधीन देश की राजभाषा का दर्जा दिया गया था। हिंदी एक सरल एवं सहज भाषा है। इसलिए अपने दैनिक कामकाज में इसका ज़्यादा से ज़्यादा व्यवहार करना हम सभी का कर्तव्य है।

इस अवसर पर मैं यही कहना चाहूंगा कि स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय तथा इसके सभी संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/उपक्रमों और आयुर्विज्ञान संस्थानों आदि के सभी वरिष्ठ अधिकारी अपने कामकाज में हिंदी का उपयोग ज़्यादा से ज़्यादा करें जिससे कि उनके अधीनस्थ अधिकारी एवं कर्मचारी भी इसके लिये प्रेरित और उत्साहित हों।

(डॉ. मनसुख मांडविया)

कार्यालय: 348, ए-स्कंध, निर्माण भवन, नई दिल्ली – 110011 • Office: 348, A-Wing, Nirman Bhawan, New Delhi - 110011
Tele.: (O): +91-11-23061661, 23063513 • Telefax : 23062358 • E-mail : india-hfm@gov.in

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

'समय सब कुछ बदल देता है, इसलिए हमें समय के साथ सब्र से काम करते हुए अपने विचारों को बदलकर मंज़िल तक पहुँचने की कोशिश करनी चाहिए।'
एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड, बदलती परिस्थितियों के अनुकूल एवं जन उपयोगी परियोजनाओं व महिलाओं की स्वास्थ्य रक्षा उत्पादों को भारत भर के सुदूर क्षेत्रों तक पहूँचाकर, मानव सेवा पर प्रमुखता देते हुए, अपने लक्ष्य (किफायती मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्यरक्षा उत्पाद एवं सेवाओं का विपणन) को साकार करने में सदा कटिबद्ध रहता है। जिससे, कंपनी आज की मांग के अनुसार महिलाओं की स्वास्थ्य स्वच्छता के लिए 'एम कप '(मेन्स्ट्रुअल कप) के प्रोन्नमन में अधिक ध्यान देती है। इसके अतिरिक्त हम ग्राफीन कंडोम, मूड्स कंडोम, ट्यूबल रिंग्स, वेलवेट, एमली, सैनिटरी नैप्किन (हैप्पी डेइस) आदि उत्पादें किफायती मूल्य पर आम जनों को प्रदान कर रहे हैं। यहाँ नूतन तकनॉलजी को विकसित करने के क्षेत्र में कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास केंद्र तथा जनता की स्वास्थ्य रक्षा से जुडी अन्य कार्यक्रमों के आयोजन में एचएलएल परिवार नियोजनप्रोन्नमनन्यास(एचएलएफपीपीटी) एवं एचएलएल प्रबंधन अकादमी का काम उल्लेखनीय है। यह मात्र नहीं, वर्ष 2022 - 23 से 3708 करोड के व्यापारावर्त्त के साथ कंपनी प्रगति की राह पर आगे बढ रही है।

आगे, एचएलएल की सभी यूनिटों में सुरक्षा उपायों का शत प्रतिशत अनुपालन हो रहा है, जिसके फलस्वरूप विद्यमान वर्ष में एचएलएल की पेरूरकडा और आक्कुलम फैक्टरियों को केरल सरकार के फैक्टरीस एंड बोयिलर्स विभाग द्वारा लगाये गये औद्योगिक सुरक्षा पुरस्कार भी मिला है। यह भी नहीं, खर्च कम करने के उद्देश्य से हाल ही में कंपनी की पेरूरकडा यूनिट में सोलार एनर्जी पैनल संस्थापित किया गया। वास्तव में एचएलएल के इस विजय गाथा के पीछे कंपनी के सभी कार्यालयों एवं सहायक कंपनियों के हरेक कर्मचारी का अश्रांत परिश्रम है।

एचएलएल आम लोगों के लिए उपयोगी परियोजनाओं एवं सेवाओं को समय पर लागू करने के साथ - साथ राजभाषा कार्यान्वयन पर प्रमुखता देते हुए कंपनी एवं टोलिक के तत्वावधान में विविध हिंदी कार्यक्रम माहवार आयोजित किया जा रहा है। वर्ष के दौरान कंपनी में राजभाषा नीति पर जागरूकता कार्यक्रम, अखिल भारतीय कंठस्थ प्रशिक्षण, नव नियुक्त कर्मचारियों के लिए राजभाषा नीति पर परिचय कार्यक्रम, टिप्पण एवं आलेखन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण, भारतीय भाषा कवि सम्मेलन, हिंदी डिजिटल तकनॉलजी पर अखिल भारतीय सम्मेलन, स्मरण परीक्षा, हिंदी प्रतियोगितायें, हिंदी पखवाडा समारोह एवं हिंदी संगीत मेला आदि आयोजित करने के साथ ही कॉलेज विद्यार्थियों के लिए 'विश्व पटल पर हिंदा भाषा का वर्चस्व' विषय पर राज्य स्तरीय राजभाषा सेमिनार, अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस एवं कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम, राज्य स्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि भी हम समय पर आयोजित कर सके। इस प्रकार उत्कृष्ट तरीके से राजभाषा कार्यान्वयन करने के परिणामस्वरूप स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली की तरफ से कंपनी प्रशंसा का पात्र बन गया।

इसके अलावा, एचएलएल से एक **राजभाषा पत्रिका 'समन्वया'** भी हर साल प्रकाशित किया जाता है, जिससे कंपनी में प्रचलित वर्ष में आयोजित एवं लागू किये गये सभी कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं का पूरा विवरण मिलता है। इस पत्रिका का छत्तीसवाँ अंक (ई - पत्रिका) मैं अतीव प्रसन्नता के साथ आप पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ। मैं आग्रह करता हूँ कि आप इस पत्रिका का अवलोकन करें और अपनी राय प्रकट करें ताकि हम इसका अगला अंक और भी ज्ञानवर्द्धक बना सकें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

बेजी जोर्ज

के.बेजी जोर्ज आई आर टी एस
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादकीय

'ज़िंदगी में जीत उसकी होगी, जो खुद पर विश्वास कर, लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए लगन, ईमानदारी एवं निष्ठा से कठिन परिश्रम करते हैं।'

यह ज्ञात है कि हिंदी भारत की सांस्कृतिक एवं भावनात्मक एकता की भाषा है। इसलिए यह भाषा 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को साकार करती है। जिससे राजभाषा के रूप में विराजित हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में पूरे देश में 'विविधता में एकता' बनाये रखने की अहम भूमिका निभाती है। अतः हिंदी भाषा के प्रचार - प्रसार एवं प्रोन्नमन से केंद्र सरकारी कार्यालयों के राजभाषा कार्यान्वयन की गति में भी रफ्तार आयेगी। अतः कंपनी के राजभाषा कार्यान्वयन में कामयाबी हासिल करने की ओर, केंद्र गृह मंत्रालय के दिशानिर्देशों का अनुपालन करने में हम अतीव प्रमुखता देते हैं।

आज, तकनॉलजी के विकास से कंप्यूटर में प्रयुक्त भाषा सॉफ्टवेयरों में भी नयी प्रगति हुई है। इस क्षेत्र में, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली ने मंत्रा, हिंदी वाचन जैसे नये हिंदी सॉफ्टवेयरों को विकसित किया है। हाल ही में विकसित मेम्मरी आधारित सॉफ्टवेयर कंठस्थ हिंदी कर्मचारियों के लिए एकदम उपयोगी साबित हुई है। हम कंपनी के कर्मचारियों के साथ - साथ दक्षिण क्षेत्र की टोलिक के सदस्य कार्यालयों के हिंदी कर्मचारियों को भी इस नूतन तकनॉलजी से अवगत कराने की ओर हिंदी कंठस्थ प्रशिक्षण कार्यक्रम बीच - बीच में आयोजित कर रहे हैं।

इसके अलावा, राजभाषा नीति की अद्यतन जानकारी से अपने कर्मचारियों को परिचित कराने तथा अपना शासकीय काम हिंदी में भी करने के दायित्व के प्रति अवगत कराने के लक्ष्य से हर महीने में हिंदी प्रशिक्षण एवं कार्यकलाप आयोजित कर रहे हैं। इस क्रम में, हमने, प्रचलित वर्ष में आयोजित राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम, हिंदी स्मरण परीक्षा, कर्मचारियों एवं उनके बच्चों के लिए हिंदी प्रतियोगितायें, हिंदी संगीत मेला, भारतीय भाषा कवि सम्मेलन आदि हिंदी कार्यक्रमों पर प्रतिभागियों की सहभागिता सुनिश्चित की। इन सभी गतिविधियों का पूरा विवरण हम ने अपनी राजभाषा पत्रिका **'समन्वया'** में संकलित किया है।

मैं, एचएलएल की इस गृह राजभाषा पत्रिका **'समन्वया'** के छत्तीसवाँ अंक (ई - पत्रिका) आपके सामने प्रस्तुत करना चाहता हूँ। पाठकों से मेरी उम्मीद है कि पत्रिका के आगामी अंक को सारगर्भित बनाने के लिए अपना सुविचार व्यक्त करें।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

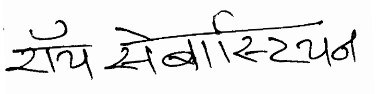

डॉ.रॉय सेबास्टियन
वरिष्ठ उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) प्रभारी

नराकास राजभाषा सम्मान

तिरुवनंतपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) वर्ष 2015 यानी अपने प्रयाण के प्रारंभ से केंद्र गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दक्षिण - पश्चिम क्षेत्र के केंद्र सरकार, उपक्रम एवं बैंक के नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए संस्थापित नराकास सम्मान हासिल कर रही है। यहाँ उल्लेखनीय है, वर्ष 2022 - 2023 के नराकास राजभाषा सम्मान (तीसरा स्थान) के लिए भी टोलिक (उपक्रम) हकदार बन गयी है। 19.01.2024 को एचएएल के प्रबंधन अकादमी, बैंगलूर में आयोजित दक्षिण - पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में आदरणीय केंद्र गृह राज्य मंत्री श्री अजयकुमार मिश्रा के करकमलों से डॉ. रॉय सेबास्टियन, उपाध्यक्ष (मानव संसाधन), एचएएलएल ने **नराकास राजभाषा सम्मान** स्वीकार किया।

इस उपलब्धि के लिए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिये डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), एचएलएल एवं सदस्य सचिव नराकास (उपक्रम) को माननीय श्री अजयकुमार मिश्रा द्वारा **प्रशस्ति पत्र** भी प्रदान किया गया।

एचएलएल मुख्यालय में राजभाषा निरीक्षण एवं कार्यशाला

संसदीय राजभाषा समिति ने 05.01.2023 को एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड का राजभाषा निरीक्षण किया। इसके अनुवर्ती कार्य के रूप में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के श्री परमानन्द आर्या, निदेशक (राजभाषा) और श्री अंकुर यादव, वैयक्तिक सहायक एचएलएल - सीएचओ के राजभाषा कार्यान्वयन के निरीक्षण के लिए 31.10.2023 को मुख्यालय आये। कंपनी के उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) डॉ. रॉय सेबास्टियन ने पुष्पगुच्छ देकर उनका हार्दिक स्वागत किया। बाद में, एचएलएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के बेजी जोर्ज आईआरटीएस से उनकी मुलाकात हुई और पूर्वाह्न 10.30 बजे को राजभाषा निरीक्षण प्रारंभ हुआ। डॉ सुरेष कुमार, आर वरिष्ठ प्रबंध क (राजभाषा) ने हमारे कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन, विभागीय कार्य, राजभाषा कार्यान्वयन में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का समर्थन आदि के बारे में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया। उसके बाद उन्होंने कार्यालय के सभी फाइल, एचएलएल और सहायक कंपनियों के वार्षिक रिपोर्ट, हिंदी पत्रिका - समन्वया, न्यूज़ लेटर-मोमेंट्स, पत्राचार, रजिस्टर, मोहर, मानक प्रपत्र, डेस्क कलेंडर, कंपनी के वेबसाइट, टोलिक के फायल आदि का अवलोकन करते हुए कहा

कि एचएलएल वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य हासिल करने के साथ साथ राजभाषा के प्रोन्नमन के लिए अनेक कार्य कर रहे हैं। निरीक्षण के दौरान, अन्य अनुभागों में हिंदी कार्य बढाने के लिए क्या किया जा सकता है, अधिकारियों द्वारा नेमी टिप्पणियां लिखने का तरीका कैसे बढाया जाएं आदि विषयों पर चर्चा हुई और निदेशक ने इसके लिए अपेक्षित मार्गदर्शन भी दिये।

बाद में, 01.11.2023 को सुबह 10.30 बजे से 11.30 बजे तक अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए **राजभाषा नीति पर प्रशिक्षण कार्यक्रम** आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री परमानन्द आर्या, निदेशक (राजभाषा), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने राजभाषा अधिनियम, नियम एवं निर्धारित लक्ष्यों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 25 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिये।

राजभाषा नीति पर परिचय कार्यक्रम

कंपनी के तिरुवनंतपुरम के विभिन्न यूनिटों के नव नियुक्त अधिकारियों को राजभाषा नीति के बारे में जागरूकता प्रदान करते हुए अधिकाधिक काम हिंदी में भी करने के लिए प्रेरित करने की ओर 19.04.2023 को एचएलएल पेरूरकडा फैक्टरी में आयोजित राजभाषा नीति पर जागरूकता कार्यक्रम में एसबीआई, तिरुवनंतपुरम के उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री सुमेष.पी. के ने क्लास लिया। उन्होंने राजभाषा अधिनियम एवं नियमों की व्याख्या देने के साथ ही हिंदी टिप्पण एवं आलेखन पर अभ्यास भी कराया। इस कार्यशाला में कंपनी के विविध यूनिटों एवं कार्यालयों के 35 कर्मचारियों की भागीदारी हुई।

राजभाषा निरीक्षण

एचएएल के यूनिटों में प्रभावी तौर पर राजभाषा निष्पादन लाने में हम अतीव प्रमुखता देते हैं और हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए हमारी यूनिटों को प्रोत्साहित करने की ओर कंपनी में एक राजभाषा चल वैजयन्ती संस्थापित की गयी है। इस पुरस्कार के लिए उत्तम यूनिट को विनिर्णीत करने और हर यूनिट की राजभाषा हिंदी के प्रोन्नमनद्य में प्रगति लाने तथा दिशानिर्देश देने के उद्देश्य से हर वर्ष पेरूरकड़ा फैक्टरी, आक्कुलम फैक्टरी, बेलगाम फैक्टरी, काक्कनाड फैक्टरी, मुंबई कार्यालय, जीएपीएल और हाइट्स में राजभाषा निरीक्षण किया जा रहा है। इस बार 13.07.2023 को श्री ए.सोमदत्तन, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग द्वारा ऑनलाइन के माध्यम से सभी यूनिटों का राजभाषा निरीक्षण किया गया।

इसके अलावा डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), एचएलएल ने 16.09.2023 को मुंबई कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया।

विश्व हिंदी दिवस और हिंदी प्रतियोगिता

हम अपने कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने की ओर कंपनी में हर महीने में कम से कम एक हिंदी कार्यक्रम आयोजित करते हैं। यह भी नहीं पदनामवार कार्यशाला या प्रतियोगिता भी आयोजित करते हैं। इस श्रेणी में, विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर यानी 10.01.2024 को कंपनी के उप महा प्रबंधक से सह उपाध्यक्ष स्तर तक के कार्यपालकों के लिए हिंदी प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता में कंपनी के विविध यूनिटों के 14 कार्यपालकों ने भाग लिया और आगे विजेताओं को नकद पुरस्कार भी प्रदान किये गये। हर साल विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हम कंपनी में किसी प्रकार का हिंदी कार्यक्रम आयोजित करते आ रहे हैं।

अखिल भारतीय कंठस्थ प्रशिक्षण कार्यक्रम

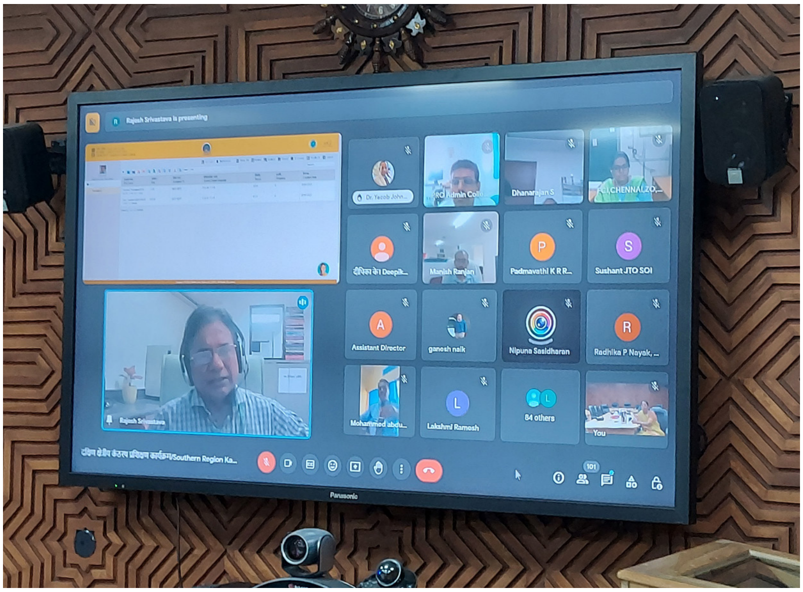

कंपनी के सभी यूनिटों के राजभाषा अधिकारी, अनुवादक, अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा विकसित हिंदी के नूतन तकनॉलजी 'कंठस्थ' के बारे में अवगत कराने के लिए 26.04.2023 और 14.02.2024 को ऑनलाइन के ज़रिए अखिल भारतीय कंठस्थ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इन दोनों कार्यक्रमों का उद्घाटन एचएएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के.बेजी जोर्ज आई आर टी एस ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रगति लाने के उद्देश्य से इस नवीन सॉफ्टवेयर को विकसित किया है, जिससे हिंदी विभाग से जुडे कर्मचारी आसानी से अपना कार्य कर सकते हैं। इसलिए सभी प्रतिभागी इस सत्र से खूब लाभ उठाने की कोशिश करें। गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक (राजभाषा व तकनीकी) श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव ने इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में क्लास लिया। एचएएल के सह उपाध्यक्ष (राजभाषा) डॉ.वी.के.जयश्री और वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) डॉ.सुरेष कुमार.आर ने क्रमशः स्वागत एवं धन्यवाद की भूमिका निभायी। इन कार्यक्रमों से विभिन्न यूनिटों से करीब 102 अधिकारी एवं कर्मचारी लाभान्वित हुए।

अनुभाग बैठक

कंपनी के राजभाषा कार्यान्वयन में लगातार वृद्धि लाने के उद्देश्य से हरेक यूनिट के कर्मचारियों के लिए माहवार राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक विभाग या अनुभाग के हिंदी कार्यान्वयन में अधिक ध्यान देने की ओर सभी यूनिटों में अनुभाग बैठक भी आयोजित की जा रही है। इस श्रेणी में, हमने एचएलएल निगमित मुख्यालय के सोर्सिंग अनुभाग के लिए 19 मई 2023 को अनुभाग बैठक आयोजित की। इस अवसर पर डॉ.वी.के.जयश्री, सह उपाध्यक्ष (राजभाषा), एचएलएल ने सोर्सिंग अनुभाग के सभी कर्मचारियों को राजभाषा अधिनियम एवं नियम के बारे में जागरूकता प्रदान की। इससे 23 कर्मचारियों ने लाभ उठाया।

अखिल भारतीय भाषा कवि सम्मेलन

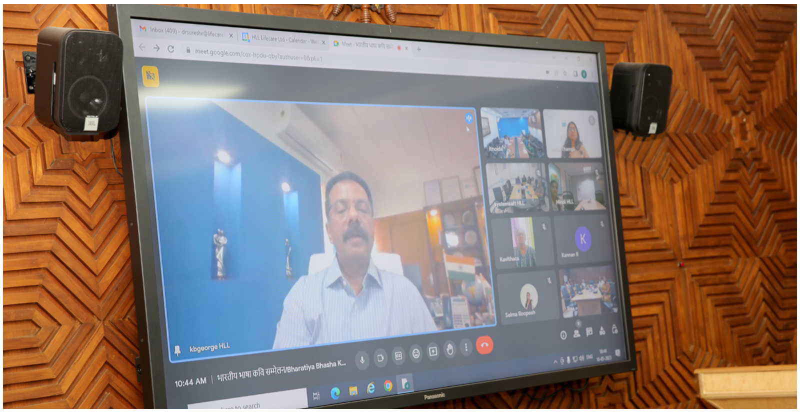

कंपनी के राजभाषा कार्यान्वयन में बढावा लाने के हिस्से के रूप में 10 मई 2023 को ऑनलाइन/ ऑफलाइन के ज़रिए अखिल भारतीय भाषा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम से हमारा उद्देश्य है, कंपनी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वरचित कवितायें, चाहे वह मातृभाषा में हो या हिंदी या अन्य भाषाओं में हो, प्रस्तुत करने के लिए मंच प्रदान करके उनकी सर्गात्मकता को विकसित करना, जिससे मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानार्जन भी होता है। श्री बेजी जोर्ज आई आर टी एस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने अपने उद्घाटन भाषण के साथ-साथ हिंदी में एक प्रेरणादायी कविता भी प्रस्तुत की। कंपनी के निदेशक (वित्त), डॉ.गीता शर्मा ने अफ्गानिस्तान की महिलाओं की दीनता पर आधारित एक स्वरचित कविता का आलापन किया। आगे कंपनी के निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन), डॉ. अनिता तंपी ने मलयालम में स्वरचित कविता का हिंदी में अनूदित वर्ज़न का आलापन किया। साथ ही इस कार्यक्रम में कंपनी के विविध यूनिटों और समनुषंगी कंपनियों से 44 अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा अपनी कवितायें प्रस्तुत की गयीं। स्वरचित कवितायें प्रस्तुत किये कर्मचारियों को रु. 500/- का नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। डॉ.वी.के.जयश्री, सह उपाध्यक्ष (राजभाषा) और डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने क्रमशः स्वागत एवं धन्यवाद का काम संभाला। इस अवसर पर विभिन्न यूनिटों से 15 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी कवितायें प्रस्तुत कीं।

हिंदी डिजिटल तकनीकी पर अखिल भारतीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

कंपनी अपनी यूनिटों और समनुषंगियों के कर्मचारियों को सरकारी काम हिंदी में भी करने को प्रेरित करने और उसके लिए आवश्यक प्रशिक्षण देने की ओर 22 जून 2023 को ऑनलाइन के ज़रिए हिंदी डिजिटल तकनीकी पर अखिल भारतीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन एसबीआई, कोयंबत्तूर के मुख्य प्रबंधक, श्री के. अनिलकुमार ने किया। उन्होंने वॉयस एवं फोटो के माध्यम से अनुवाद करने का तरीका, इंडिक की - बोर्ड, एक्सल में हिंदी टाइपिंग, मोबाइल के मेसेजों को दूसरी भाषा में अनुवाद करना आदि विविध मदों की जानकारी प्रदान की। इस कार्यक्रम से कंपनी के विविध कार्यालयों के 82 अधिकारी/कर्मचारी प्रशिक्षित किए गए। तदवसर पर डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने सबका स्वागत किया।

हिंदी टिप्पण एवं आलेखन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण

कंपनी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 18.08.2023 को टिप्पण एवं आलेखन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम से हमारा लक्ष्य था, अपने कर्मचारियों को हरेक अनुभाग में प्रयुक्त टिप्पणियों से परिचित करना और सरकारी पत्र हिंदी में भी आलेखन करने के लिए अभ्यास देना। डॉ.वी.के.जयश्री, सेवा निवृत्त सह उपाध्यक्ष (राजभाषा), एचएलएल ने क्लास का संचालन किया। डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने स्वागत भाषण दिया। इस कार्यक्रम में 23 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

आगे 21.03.2024 को एचएलएल निगमित मुख्यालय, पेरूरकडा फैक्टरी, आक्कुलम फैक्टरी एवं सहायक कंपनी हाइट्स के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए टिप्पण एवं आलेखन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण एचएलएल पेरूरकडा फैक्टरी के जवाहरलाल नेहरू जन्मशताब्दी स्मारक कल्याण केंद्र में आयोजित किया गया। श्रीमती गिरिजाकुमारी.डी.टी, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा), कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, तिरुवनंतपुरम ने टिप्पण एवं आलेखन के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करते हुए अभ्यास आधारित क्लास लिया। इस व्यावहारिक प्रशिक्षण से कंपनी के 25 कर्मचारियों ने लाभ उठाया। डॉ.सुरेष कुमार. आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने स्वागत भाषण दिया। अंत में हरेक यूनिट के एक - एक कर्मचारी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

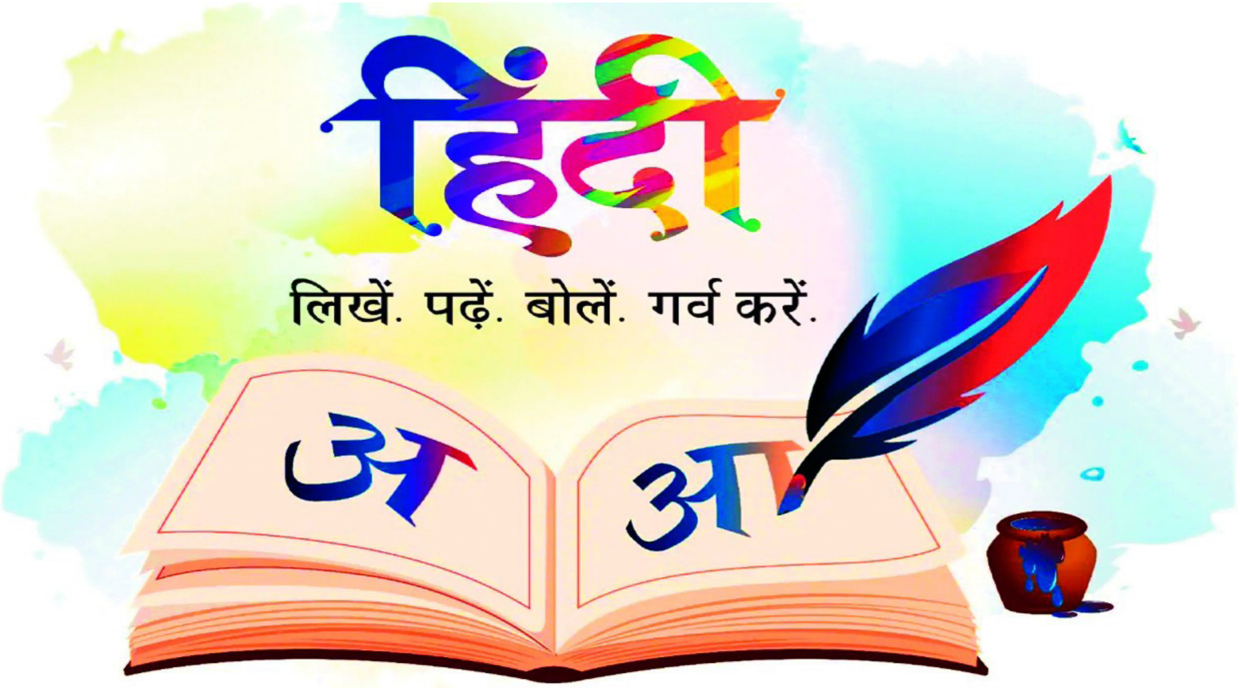

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2023

केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों के हिंदी पखवाड़ा समारोह का शुभारंभ 14 सितंबर 2023 को महाराष्ट्रा के पुणे में संपन्न हुआ था। उद्घाटन समारोह में हमारी कंपनी के विविध यूनिटों के वरिष्ठ अधिकारी एवं हिंदी कार्मिकों ने भाग लिए।

आगे, 22 सितंबर 2023 को कर्मचारियों के लिए आयोजित निबंध लेखन, अनुवाद, टिप्पण व आलेखन, तस्वीर क्या बोलती है, वक्तृता, प्रशासनिक शब्दावली, हिंदी कविता पाठ, समाचार वाचन, देशभक्ति गीत, फिल्मी गीत प्रतियोगिताओं में 31 कर्मचारियों की भागीदारी हुई। 28 सितंबर 2023 को पेरूरकडा फैक्टरी में कर्मचारियों के बच्चों के लिए विविध हिंदी प्रतियोगिताएँ -निबंध लेखन, अनुवाद, वक्तृता, हिंदी कविता पाठ, श्रुत लेखन, सुलेख, देशभक्ति गीत, फिल्मी गीत - आयोजित की गईं। इनमें प्राइमरी, हाइस्कूल और कॉलेज स्तर के बच्चों की सक्रिय भागीदारी हुई।

वाक्-पटुता कार्यक्रम

कंपनी के कर्मचारियों को हिंदी में अपनी राय व्यक्त करने के लिए अवसर प्रदान करने को लक्ष्य करके पेरूरकड़ा फैक्टरी, तिरुवनंतपुरम के जवाहरलाल नेहरू जन्मशताब्दी स्मारक कल्याण केंद्र में 20 सितंबर, 2023 को '**एचएलएल की सेवाएँ- आम लोगों के लिए राहत**' विषय पर वाक् - पटुता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कंपनी के विभिन्न यूनिटों की भागीदारी हुई। श्री के. जे.श्रीकुमार, उपाध्यक्ष (आईडी) - हाइट्स; श्री युधिष्ठिर महाराणा, वरिष्ठ प्रबंधक (एफ), एचएलएल - सीएचओ और श्रीमती चित्रलेखा.ओ, एमजी 3, एचएलएल-एएफटी को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त हुए।

संघ नेताओं के लिए राजभाषा नीति पर जागरूकता कार्यक्रम

कंपनी के कर्मचारियों को अपना सरकारी काम हिंदी में भी करने को प्रेरित करने, इसके लिए आवश्यक प्रशिक्षण देने और राजभाषा से संबंधित अद्यतन जानकारियों से परिचित कराने की ओर 06.10.2023 को संघ नेताओं के लिए राजभाषा नीति पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में पेरूरकडा और आक्कुलम फैक्टरियों से 22 कर्मचारी प्रशिक्षित किये गये। श्री ए. सोमदत्तन, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा), मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, तिरुवनंतपुरम ने क्लास लिया। डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने सबका स्वागत किया।

हिंदी पखवाड़ा - समापन समारोह एवं हिंदी संगीत मेला

विभिन्न रंगारंग हिंदी कार्यक्रमों से एचएलएल में हिंदी पखवाडा आयोजित किया गया और इसके समापन समारोह एवं हिंदी संगीत मेला का उद्घाटन 8 नवंबर 2023 को पेरूरकडा फैक्टरी के सर्गम हॉल में संपन्न हुआ। समारोह का उद्घाटन कंपनी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री के बेजी जोर्ज आई आर टी एस द्वारा किया गया। उन्होंने अपने भाषण में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की राजभाषा समीक्षा बैठक और मुख्यालय

में आयोजित राजभाषा निरीक्षण के बाद दी गयी रिपोर्ट में प्रतिपादित कंपनी के उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन की बातों का उल्लेख किया। इसके अलावा, हिंदी पखवाडा के दौरान आयोजित कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं, कार्यशाला आदि में कर्मचारियों की उत्सुकतापूर्ण भागीदारी की प्रशंसा की। आगे डॉ.गीता शर्मा, निदेशक (वित्त) और डॉ.रॉय सेबास्टियन, उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) ने क्रमशः माननीय केंद्र गृह मंत्री और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री का हिंदी दिवस का संदेश पढा। पेरूरकडा फैक्टरी के यूनिट मुख्य, श्रीमती स्मिता एल जी और आक्कुलम फैक्टरी के यूनिट मुख्य, श्री आर मुकुन्द ने क्रमशः स्वागत एवं धन्यवाद भाषण दिया। इस समारोह में कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों, संघ नेताओं, कर्मचारियों और बच्चों ने भाग लिया। समारोह के अंत में कंपनी के विविध यूनिटों के कर्मचारियों की सहभागिता से हिंदी संगीत मेला शानदार तरीके से आयोजित किया गया।

राजभाषा चल वैजयन्ती

एचएलएल के यूनिटों के बीच में प्रभावी तौर पर राजभाषा निष्पादन लाने के उद्देश्य से कंपनी में एक राजभाषा चल वैजयन्ती संस्थापित की गयी है। इस बार यह पुरस्कार एचएलएल-पेरूरकडा फैक्टरी को मिला। समापन समारोह के दौरान अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के बेजी जोर्ज आई आर टी एस द्वारा यह पुरस्कार पेरूरकडा फैक्टरी के यूनिट मुख्य श्रीमती स्मिता एल.जी को प्रदान किया गया। आगे, उन्होंने हिंदी पखवाडा समारोह के दौरान कंपनी के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं उनके बच्चों केलिए आयोजित विविध हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं, एस एस एल सी/सी बी एस ई/प्लस टु परीक्षाओं में हिंदी विषय में 'ए प्लस' ग्रेड या 90% से अधिक अंक प्राप्त कर्मचारियों के बच्चों, वाक्पटुता कार्यक्रम के विजेताओं, स्मरण परीक्षा के विजेताओं को पुरस्कार और पारंगत परीक्षा में उत्तीर्ण हुए कर्मचारियों को प्रमाणपत्र प्रदान किये।

आज का विचार

एचएलएल के सभी यूनिटों एवं सहायक कंपनियों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हफ्ते में एक हिंदी वाक्य पढने का अवसर प्रदान करते हुए उनके मन में हिंदी भाषा के प्रति लगाव पैदा करने और इस प्रकार अपना कार्यालयीन काम हिंदी में भी करके हिंदी विभाग को समर्थन देने का मनोभाव पैदा करने के लक्ष्य से 'आज का विचार' शीर्षक पर महान व्यक्तियों के उद्धरण सभी कर्मचारियों के ई - मेल के माध्यम से हफ्ते में एक दिन अग्रेषित किया जाता है। देश भर की एचएलएल यूनिटों के कर्मचारियों से इस के प्रति अच्छी प्रतिक्रियायें मिल रही हैं।

स्मृति परीक्षा

कंपनी के राजभाषा कार्यान्वयन को बढाने के लिए 'रोज़ एक शब्द पढिए कार्यक्रम' के अधीन हम प्रति दिन कंप्यूटर के आई पी मेसेंजर एवं स्वागत कक्ष में रखे एलसीडी के माध्यम से एक हिंदी एवं समानार्थी अंग्रेज़ी शब्द देते हैं और उन शब्दों के आधार पर माहवार स्मृति परीक्षा आयोजित की जाती है। इस कार्यक्रम में कंपनी के अधिक कर्मचारियों की भागीदारी होती है। यह कार्यक्रम कंपनी के सभी यूनिटों में प्रति माह आयोजित करके किसी समारोह के अवसर पर प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं।

प्रशस्ति पुरस्कार

हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान और सांसद श्री शंकर दयाल सिंह की जन्मतिथि की यादगार में भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्रालय के निर्देशानुसार संस्थापित प्रशस्ति पुरस्कार (साइटेषन एवार्ड), वर्ष 2022-23 के दौरान एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड, टोलिक (उपक्रम) एवं गैर संस्थाओं के राजभाषा से संबंधित सभी कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने के उपलक्ष्य में एचएलएल के विभिन्न यूनिटों के अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच में श्री एन.नंदकुमार, अधिकारी 2, एचएलएल पेरूरकड़ा फैक्टरी को एचएलएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री के.बेजी जोर्ज आई आर टी एस द्वारा प्रदान किया गया।

कॉलेज विद्यार्थियों के लिए राज्य स्तरीय राजभाषा सेमिनार

केरल के विविध कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए 20.01.2024 को 'विश्व भाषा के रूप में हिंदी का वर्चस्व' विषय पर राज्य स्तरीय राजभाषा सेमिनार ऑनलाइन के ज़रिए आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया और उन्होंने एचएलएल के उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) डॉ.रॉय सेबास्टियन ने वैश्वीकरण के इस युग में विद्यार्थियों को हिंदी पढने की आवश्यकता पर ज़ोर दी और एचएलएल द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रोन्नमन के लिए किये जा रहे कार्यक्रमों को भी व्यक्त किया। डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने सभी का स्वागत किया। इस सेमिनार में केरल के विविध कॉलेजों से 18 छात्र - छात्राओं ने पेपर प्रस्तुत किया और कई छात्रों ने सेमिनार में भाग लिये। कुमारी गौरी.ए.एस, एमजी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम और कुमारी इंदु.पी.टी, महाराजास कॉलेज, एर्णाकुलम ने क्रमशः प्रथम (रु.2000/-) एवं द्वितीय (रु.1500/-) पुरस्कार हासिल किया। तृतीय पुरस्कार (रु.1000/-) के लिए कुमारी रुद्रा नायर, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम और कुमारी सुजिता.एल, कार्यवट्टम कैंपस, तिरुवनंतपुरम को चुन लिया गया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र दिया गया। श्रीमती महेश्वरी अम्मा, सेवानिवृत्त उप निदेशक (राजभाषा), वीएसएससी ने विधिनिर्णायक का काम संभाला।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस और कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम

हिंदी पढने वालों को आगे अपने कैरियर के विविध आयामों के बारे में अवगत कराने के उद्देश्य से, अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के सिलसिले में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम के विद्यार्थियों के लिए कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ.सुरेष कुमार. आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने हिंदी के विभिन्न कोर्स पढने वालों की नौकरी की संभावनायें एवं विभिन्न पदों पर आवेदन देने के तरीका के बारे में चर्चा की। इस कार्यक्रम में हिंदी एम ए और स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा के 25 विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी हुई। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के प्रमुख डॉ. एप्सिलिन और एसोसियेट प्रोफसर डॉ.रम्या ने क्रमशः स्वागत एवं धन्यवाद का काम संभाला। कार्यक्रम के अंत में चार विद्यार्थियों ने अपनी - अपनी प्रतिक्रियायें भी व्यक्त कीं।

गणतंत्र दिवस समारोह

इस वर्ष के कंपनी के गणतंत्र दिवस समारोह रंगीले तौर पर मनाया गया। इस दिन के राष्ट्रीय महत्व को मानते हुए निगमित मुख्यालय के विविध अनुभागों के राजभाषा कार्यान्वयन पर विकास लाने की ओर संस्थापित अग्रणी अनुभाग पुरस्कार और टिप्पण एवं आलेखन पुरस्कार इस अवसर पर विजेताओं को वितरित किया गया। एचएलएल निगमित मुख्यालय के लिए अग्रणी अनुभाग पुरस्कार (रोलिंग शील्ड एवं नकद पुरस्कार) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने निगमित मुख्यालय के सुरक्षा अनुभाग के

मुख्य सुरक्षा अधिकारी श्री तंपी एस दुर्गादत्त आई पी एस एवं पर्यवेक्षक (सुरक्षा) श्री षाजी वर्गीस को प्रदान किया। आगे, टिप्पण एवं आलेखन के लिए नकद पुरस्कार श्रीमती ओमना.के.के, अधिकारी 5, श्री रतीष.आर, अधिकारी 2 और श्रीमती धन्या. सी.एस, कार्यालय सहायक को प्रदान किया। इसके अलावा उप महा प्रबंधक से सह उपाध्यक्ष स्तर तक के अधिकारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिता के विजेता श्री यु.नागराजन, उप महा प्रबंधक (आई टी) को भी नकद पुरस्कार दिया गया।

हिंदी कार्यक्रमों में भागीदारी

राजभाषा विभाग, केंद्र गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 14 सितंबर 2023 को शिव छत्रपति स्पोर्टर्स कॉम्प्लेक्स, महाराष्ट्रा, पुणे में आयोजित हिंदी पखवाडा का उद्घाटन समारोह एवं तृतीय राजभाषा सम्मेलन में एचएलएल के उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) डॉ.रॉय सेबास्टियन, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) डॉ.सुरेष कुमार.आर, एचएलएल – हाइट्स के उप महा प्रबंधक (मानव संसाधन) श्री गौरव शर्मा, एचएलएल पेरूरकडा फैक्टरी के वरिष्ठ अधिकारी श्रीमती राजेश्वरी. ए.के और वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्रीमती अर्चना देवी ने भाग लिया।

केंद्र गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा 19.01.2024 को एचएलएल के प्रबंधन अकादमी, बैंगलूर में आयोजित दक्षिण - पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में एचएलएल के उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) डॉ.रॉय सेबास्टियन और वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) डॉ.सुरेष कुमार.आर ने भाग लिया।

केंद्र सरकार के कार्यालयों के राजभाषा कार्यान्वयन के निष्पादन की समीक्षा करने के लिए, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा 3.7.2023 को डॉ.अंबेदकर इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित सलाहकार समिति की बैठक में डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने भाग लिया।

भारतीय रिज़र्व बैंक, तिरुवनंतपुरम द्वारा विश्व हिंदी दिवस के सिलसिले में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के सदस्य कार्यालयों के लिए 08 जनवरी, 2024 को होटेल ताज विवांटा, तिरुवनंतपुरम में सामान्य बैंकिंग विषयों पर आयोजित एक दिवसीय हिंदी संगोष्ठी में एचएलएल के डॉ.सुरेष कुमार. आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) और श्रीमती अश्वती.यु, हिंदी अनुवादक उपस्थित हुए। इस कार्यक्रम में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) के सदस्य कार्यालयों से 12 हिंदी कार्मिकों भी उपस्थिति हुई।

एचएलएल - मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

हिंदी पखवाडा समारोह

एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय भवन, मुंबई, खारघर में 26 सितंबर 2023 से हिंदी पखवाडा समारोह श्री हरि आर पिल्लै खारघर कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख एवं उप उपाध्यक्ष (डब्लियु सी) व राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष और श्री अरुण गंगाधरण एच सी एस के उप महा प्रबंधक (स्वास्थ्य रक्षा सेवाएं) की अनुमति से आयोजित किया गया।

सर्वप्रथम 26 सितंबर 2023, अपराह्न 3.00 बजे को आयोजित हिंदी दिवस एवं हिंदी सप्ताह के उद्घाटन समारोह में कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी कर्मचारियों द्वारा राजभाषा संबंधी प्रतिज्ञा ली गयी और यह सुनिश्चित किया गया कि सभी अपना हिंदी का कार्य रुचि के साथ करें। इस अवसर पर माननीय केंद्र गृह मंत्री के हिंदी दिवस का संदेश भी पढ़ा।

हिंदी सप्ताह के उद्घाटन समारोह के बाद हिंदी वाक्-पटुता कार्यक्रम का आयोजन किया गया और बाद में निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं।

हिंदी निबंध प्रतियोगिता - 26 सितंबर 2023

प्रथम स्थान - श्रीमती वर्षा बालकृष्ण डेरे, इनवेंटरी एच सी एस

द्वितीय स्थान - श्री अजित पिल्लै, प्रबंधक (मानव संसाधन), एच सी एस

तृतीय स्थान - कु.अंजुम खान, रिसेप्शनिस्ट

वाद विवाद प्रतियोगिता - 27 सितंबर 2023

विजेता टीम के नाम

कु.काजल कांबले, खाता अधिकारी (आर बी डी)

कु.अंजुम खान, रिसेप्शनिस्ट

श्री ऋषिकेश नायगांवकर, खाता अधिकारी (आर बी डी)

कु. सोनाली फडतरे, सहायक व्यवस्थापक सहायक

कु.स्नेहल भिलारे, खाता कार्यपालक

पाठ सारांश प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता - 28 सितंबर 2023

प्रथम स्थान - कु.प्रियंका साहू (एम आई एस एच सी एस)

द्वितीय स्थान - श्री रोशन शेलार (तकनीकी विभाग)

तृतीय स्थान - श्री प्रदीप शंकर नारायण (लेखा एवं वित्त विभाग)

कविता पाठ प्रतियोगिता (स्वरचित/प्रसिद्ध कवि द्वारा लिखित कविता) - 29 सितंबर 2023

प्रथम स्थान - श्री कल्पित नरेश परब (खाता अधिकारी/आर बी डी)

द्वितीय स्थान - श्रीमती वर्षा बालकृष्ण डेरे (इनवेंटरी एच सी एस)

तृतीय स्थान - कु.मनाली डी पंडित (इनवेंटरी एच सी एस)

हिंदी सप्ताह समापन समारोह

हिंदी सप्ताह के समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण 18 अक्तूबर 2023 शाम 5.00 बजे को आयोजित किया गया। श्री हरि आर पिल्लै राजभाषा कार्यान्वयन के अध्यक्ष, एचएलएल मुंबई, खारघर कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख एवं उप उपाध्यक्ष (डब्लियु सी) की उपस्थिति में स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। आगे, कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी श्री अरुण गंगाधरण (उप महा प्रबंधक, एचसीएस) ने श्री अक्षय झेंडे (वित्त), श्री अजित पिल्लै, प्रबंधक (मानव संसाधन),एचसीएस, डॉ.सलेश चंद्रन पी, प्रबंधक (एचसीएस), सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का कार्यक्रम में उपस्थित होने एवं निर्णायक मंडल का भाग बनने एवं सहयोग देने के लिए धन्यवाद अदा किया। हिंदी सप्ताह समारोह के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं को राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष द्वारा पुरस्कार एवं प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया गया और अन्य प्रतिभागियों को प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र भी दिये गये।

पुरस्कार वितरण

श्री के बेजी जोर्ज आई आर टी एस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एचएलएल द्वारा पुरस्कार वितरित किये जाते हैं।

वाक्पटुता कार्यक्रम के विजेता

स्मरण परीक्षा के विजेता

पारंगत परीक्षा के विजेता

हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता

आदर - सम्मान

श्री के. बेजी जोर्ज आई आर टी एस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एचएलएल का कार्यकाल 26 मार्च 2024 को पूरा हो जाने के सिलसिले में 19 मार्च 2024 को कंपनी में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तरफ से आयोजित विदाई बैठक के अवसर पर राजभाषा विभाग की ओर से श्री के. बेजी जोर्ज को समृतिचिह्न प्रदान करते हैं डॉ.रॉय सेबास्टियन वरिष्ठ उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) प्रभारी। साथ हैं डॉ.गीता शर्मा, निदेशक (वित्त), डॉ.अनिता तंपी, निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन)।

डॉ.वी.के.जयश्री, सह उपाध्यक्ष (राजभाषा) 33 वर्ष की सेवा के बाद मई, 2023 को एचएलएल से सेवानिवृत्त हुई। उनके कार्यकाल में कंपनी को उत्कृष्ट राजभाषा निष्पादन के सिलसिले में दस बार राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और टोलिक (उपक्रम) को शुरुआत के समय से यानी वर्ष 2015 से लगातार क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार भी प्राप्त हुए है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में श्री के.बेजी जोर्ज आई आर टी एस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने डॉ.वी.के.जयश्री, सह उपाध्यक्ष (राजभाषा) को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तरफ से स्मृति चिह्न प्रदान किया।

इसके अलावा, एचएलएल के सभी यूनिटों एवं समनुषंगियों के हिंदी कर्मचारियों की उपस्थिति में आयोजित बैठक के अवसर पर डॉ.रॉय सेबास्टियन वरिष्ठ उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) द्वारा हिंदी विभाग की ओर से स्मृति चिह्न डॉ.वी.के.जयश्री, सह उपाध्यक्ष (राजभाषा) को प्रदान किया गया।

आईब्रेस्टएक्ज़ाम: यु ई लाइफसाइंसेज, युएसए के साथ एचएलएल का सहयोग

स्तन कैंसर का शीघ्र पता लगाने के लिए एक अभिनव समाधान

एचएलएल ने स्तन कैंसर का शीघ्र पता लगाने के लिए एक क्रांतिकारी उपकरण 'आईब्रेस्टएक्ज़ाम' को पेश करते हुए स्तन कैंसर से संबंधित उच्च मृत्यु दर से मुकाबला करने की ओर युएसए आधारित एक अग्रणी महिला स्वास्थ्य प्रवर्तक युई लाइफसाइंसेज के साथ हाथ मिलाया है।

ग्लोबल कैंसर ऑब्जर्वेटरी अध्ययन के अनुसार, भारत में किसी भी अन्य देश की तुलना में स्तन कैंसर से संबंधित मौतों की संख्या अधिक है, जिसमें 50 वर्ष से कम उम्र की महिलाएं बडी संख्या में इस बीमारी से पीड़ित हैं। अधिकांश मामलों का निदान देर से किया जाता है, जिससे जीवित रहने की

दर कम हो जाती है। इसका अभिनव समाधान खोजने के लिए, एचएलएल ने आईब्रेस्टएक्ज़ाम की देशव्यापी पहुंच के लिए उसे सबसे आगे लाने की ओर युई लाइफसाइंसेज को पाँच

साल के लिए सूचीबद्ध किया है।

आईब्रेस्टएक्ज़ाम नैदानिक स्तन परीक्षणों के लिए एक मानकीकृत प्रक्रिया प्रदान करता है, जो परीक्षण प्रक्रिया में परिवर्तनशीलता दूर करता है। कम संसाधन सेटिंग में मैमोग्राम स्क्रीनिंग से जुडी चुनौतियों पर यह उपकरण एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में कार्य करता है। 25,000 से अधिक महिलाओं से जुडे स्वतंत्र अध्ययनों के माध्यम से चिकित्सकीय दृष्टि से मान्य आईब्रेस्टएक्ज़ाम एक अनूठी तकनीक है, जो स्तन स्वास्थ्य जांच में क्रांतिकारी बदलाव लाने का वादा करती है। एचएलएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के बेजी जोर्ज आईआरटीएस ने इस सहयोग पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि हमें अपने महिला स्वास्थ्य उत्पाद पोर्टफोलियो का विस्तार करने के लिए युई लाइफ़साइंसेज के साथ साझेदारी करने में खुशी हो रही है। आईब्रेस्टएक्ज़ाम से, हम हर महिला को उसके घर में ही सबसे किफायती दर पर स्तन कैंसर का शीघ्र पता लगाने की सुविधा प्रदान कर सकते हैं यह सहयोग भारत भर में लाखों महिलाओं को लाभान्वित करेगा और अनेकों के जीवन बचाएगा।

आईब्रेस्टएक्ज़ाम, वास्तविक समय में, देखभाल की बात पर और मैन्युअल व्याख्या की आवश्यकता के बिना टिश्यु इलास्टिसिटी के अंतर के मापन के लिए डायनामिक सह-प्लानर कैपेसिटिव सेंसर तकनॉलजी में शामिल है। यह स्वस्थ, लक्षण रहित महिलाओं में चिकित्सकीय रूप से प्रासंगिक स्तन गांठों की पहचान करने और परीक्षण करने में मदद करता है। यह हाथ से पकड़े योग्य, गैर - आक्रामक और विकिरण - मुक्त होने के कारण उन महिलाओं की शीघ्र पता लगाने में मदद करता है, जिस समुदाय में वे रहती हैं और काम करती हैं। आईब्रेस्टएक्ज़ाम क्लाउड पर डेटा को सुरक्षित रूप से संग्रहीत करके रोगी के निर्बाध फॉलोअप की सुविधा भी प्रदान करता है। यह उपकरण महिला स्वास्थ्य क्षेत्रों में कार्यरत फ्रंटलाइन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, नर्सों, प्राथमिक देखभाल डॉक्टरों और गैर सरकारी संगठनों के द्वारा उपयोग करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

आईब्रेस्टएक्ज़ाम, महिलाओं में इसकी सटीकता, प्रभावशालिता और स्वीकार्यता के जाँच के लिए 8 से अधिक स्वतंत्र नैदानिक अध्ययन किए हैं। ये स्वतंत्र अध्ययन प्रतिष्ठित कैंसर अनुसंधान केंद्रों जैसे मलबार कैंसर सेंटर (इंडिया), द मेमोरियल स्लोअन केटरिंग कैंसर सेंटर (यूएसए) और अन्य द्वारा आयोजित किए गए थे। इसके परिणाम द लान्सेट ग्लोबल हेल्थ, द अमेरिकन सोसाइटी ऑफ ब्रेस्ट सर्जन्स, सैन एंटोनियो ब्रेस्ट सिम्पोज़ियम, द जर्नल ऑफ क्लिनिकल ऑन्कोलॉजी और अन्य सर्वोच्च अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

आईब्रेस्टएक्ज़ाम को 12 से अधिक देशों में अनुमोदन प्राप्त हुआ है। इसे युएस एफडीए से मंजूरी मिली और सीई मार्क, आईएसओ 13485 और डब्ल्यूएचओ जीएमपी प्रमाणन प्राप्त हुआ है। इसको डब्लियुएचओ कम्पेंडियम द्वारा ''कम संसाधन सेटिंग्स के लिए अभिनव स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी'' के रूप में भी मान्यता दी गई है। इस लागत प्रभावी समाधान को स्तन परीक्षण स्क्रीनिंग के लिए हर परीक्षण की औसत लागत लगभग 500 रुपए तक कम करने की क्षमता है। एचएलएल विभिन्न राज्यों में शीघ्र पहचान कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न राज्य सरकारों को यह उत्पाद प्रदान करने की योजना बना रहा है। इसके अलावा एचएलएल आईब्रेस्टएक्ज़ाम की पहुँच बढाने के लिए निजी स्वास्थ्यरक्षा कार्यकर्ताओं और गैर सरकारी संगठनों के साथ सीधा सहयोग करेगा।

थिंकल-एम-कप एक अभिनव पहल

एचएलएल की सीएसआर परियोजना, थिंकल, भारत के विभिन्न भागों में अपना स्थान जमाने में कामयाब बन गयी है। इस परियोजना का उद्देश्य है, मासिक धर्म स्वच्छता प्रथाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाना और पारंपरिक मासिक धर्म उत्पादों के लिए स्थायी विकल्पों को बढ़ावा देना। इस पहल के हिस्से के रूप में, लाभार्थियों को पुनः प्रयोज्य मासिक धर्म कप वितरित किए जाते हैं, जो मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन के लिए एक सुरक्षित, पर्यावरण-अनुकूल और लागत प्रभावी समाधान प्रदान करते हैं। अगर 10,000 लोग लगातार 5 साल तक इन मेन्स्ट्रुअल कप का इस्तेमाल करें तो इससे लगभग 200 टन सैनिटरी नैपकिन कचरा कम हो जायेगा।

थिंकल परियोजना पहले ही तेलंगाना, महाराष्ट्र, झारखंड राज्यों और केरल के विभिन्न ब्लॉक/ग्राम पंचायतों और निगमों में लागू की गयी है। कुंबलंगी ग्राम पंचायत, देश का पहला मॉडल पर्यटन गांव, को केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मुहम्मद खान द्वारा 13 जनवरी, 2022 को भारत की पहली सैनिटरी नैपकिन-मुक्त पंचायत के रूप में घोषित किया गया। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि पंचायत में थिंकल परियोजना के सफल कार्यान्वयन के माध्यम से संभव हुई।

थिंकल परियोजना का उदय 2018 केरल बाढ़ के दौरान सामने आयी अपशिष्ट निपटान चुनौतियों की प्रतिक्रिया से हुई, जहाँ सैनिटरी नैपकिन की आपूर्ति में समस्याएं हुई थीं। इस पर एक अनुवर्ती अध्ययन से हमें उपयोगकर्ताओं के बीच 91.5% की उल्लेखनीय स्वीकृति दर का पता मिलता है। लेकिन, सीमित उपलब्धता और उत्पाद के बारे में जागरूकता की कमी के कारण इसे व्यापक रूप से अपनाने में बाधा आयी है। इसलिए, भारत में मासिक धर्म वाली महिलाओं के बीच मासिक धर्म कप के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए व्यापक जागरूकता पैदा करना और उत्पाद को आसानी से उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है।

एचएलएल एम-कप एक गेम-चेंजर है, जिससे महिलायें अपने मासिक धर्म के दौरान आराम से यात्रा कर सकती हैं।

'सभी लोग योगदान दें अभियान -एचएलएल में विश्व पर्यावरण दिवस

एचएलएल ने विश्व पर्यावरण दिवस के सिलसिले में 05 जून, 2023 को 'सभी लोग योगदान दें अभियान आयोजित किया। इस अभियान का उद्देश्य है प्लास्टिक प्रदूषण से मुकाबला करने और वृक्षारोपण को बढावा देने पर ध्यान देने के साथ पर्यावरणीय वार्तालाप के बारे में कर्मचारियों के बीच जागरूकता पैदा करना। इस अभियान के हिस्से के रूप में, एचएलएल ने कर्मचारियों के लिए लघु जागरूकता वीडियो के प्रसार और विभिन्न प्रतियोगितायें सहित अनेक कार्यकलाप आयोजित किये। श्री के बेजी जोर्ज आईआरटीएस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा कॉर्पोरेट मुख्यालय में पौधारोपण से विश्व पर्यावरण दिवस समारोह की शुरुआत हुई। वृक्षारोपण समारोह में वरिष्ठ कार्यपालक और कर्मचारियों ने भाग लिया। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में बताते हुए पर्यावरण में बदलाव लाने की ओर अपने योगदान देने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया।

इस समारोह के पहले, तीन टीज़र भी रिलीज किए गए। पहले टीज़र में प्लास्टिक कचरे को हटाने के महत्व को रेखांकित करते हुए, प्रकृति की सुंदरता की सराहना करने और उसका स्मरण करने के महत्व पर जोर दिया। डॉ. गीता शर्मा द्वारा प्रस्तुत दूसरे टीज़र में, छोटे बच्चों में वृक्षारोपण की संस्कृति विकसित करने के महत्व पर प्रकाश डाला गया। तीसरा टीज़र स्थायी प्रयासों के प्रति एचएलएल की अटूट प्रतिबद्धता पर केंद्रित था। इसके अतिरिक्त स्लोगन, फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी सहित प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और इस के लिए एचएलएल के विभिन्न कार्यालयों और फैक्टरियों से 42 प्रविष्टियों के साथ जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली। निर्णायकों के एक पैनल ने प्रस्तुतियों का ध्यानपूर्वक मूल्यांकन किया और प्रमाण पत्र एवं नकद पुरस्कार निदेशक (वित्त), डॉ गीता शर्मा द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर एचएलएल के कॉर्पोरेट मुख्यालय में प्रदान किए गए। इस अवसर पर डॉ. अनिता तंपी, निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन), डॉ रॉय सेबास्टियन, उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) और वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

एचएलएल के अपशिष्ट प्रबंधन प्रभाग ने समुद्री जीवन और तटीय पारिस्थिति की तंत्र को खतरे में डालने वाले प्लास्टिक कचरे और अन्य अपशिष्ट पदार्थों को हटाने के लिए शंखुमुखम समुद्र तट पर एक स्वच्छ अभियान आयोजित किया। इस प्रभाग ने म्यूसियम परिसर में एक कियोस्क भी शुरू किया और आगंतुकों को पौधे और एचएलएल के सीएसआर मासिक धर्म कप ब्रांड ''थिंकल'' वितरित किए।

एचएलएल पर्यावरण अनुकूल पहलों का समर्थन करने के लिए हमेशा सबसे आगे रहा है। एचएलएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के बेजी जोर्ज आईआरटीएस ने कहा ''हम अपनी पेरूरकडा फैक्टरी में द्रवीकृत प्राकृतिक गैस और अपनी अधिकांश फैक्टरियों में सोलार लाइट का उपयोग करते हैं।'' एचएलएल ने पहले भी ऐसे अभियान आयोजित किए हैं। वर्ष 2019 में एचएलएल ने भारत सरकार के ''स्वच्छता ही सेवा'' अभियान के अनुरूप ''प्लास्टिक मुक्त एचएलएल'' अभियान शुरू किया।

सी & एम डी
के.बेजी जोर्ज आई आर टी एस का परिवर्तनकारी कार्यकाल

एचएलएल ने अपने अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के बेजी जोर्ज आईआरटीएस को विदाई दी, जिन्होंने अपने पाँच साल का परिवर्तनकारी कार्यकाल 26 मार्च, 2024 को पूरा किया।

श्री के बेजी जोर्ज आई आर टी एस एचएलएल के समनुषंगी कंपनियों - एचएलएल इंफ्राटेक सर्वीसेस लिमिटेड (हाइट्स), लाइफ़स्प्रिंग अस्पताल और गोवा एंटीबायोटिक्स और फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड (जीएपीएल) - के अध्यक्ष भी हैं।

'भारतीय रेलवे में अतिरिक्त सचिव की भूमिका संभालते समय, श्री के.बेजी जोर्ज ने एचएलएल में वर्ष 2019-2024 के अपने कार्यकाल के दौरान पथ-प्रदर्शक योगदान एवं उल्लेखनीय वित्तीय वृद्धि रेखांकित की है।

सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ -

1. रिकॉर्ड व्यापारावर्त

श्री बेजी जोर्ज ने कंपनी के उल्लेखनीय परिवर्तन में यानी सावधानीपूर्वक योजना, पेशेवर एवं नवाचार विचारों के कार्यान्वयन, उत्पादों की लागत में कटौती और सेवाओं के विस्तार के माध्यम से एचएलएल को लगातार पाँच वर्षों तक लाभ प्रदत्त कंमनी के रूप में उभर करने में अहम भूमिका निभाई है। वित्तीय वर्ष 2021-2022 एचएलएल के इतिहास का मीलपत्थर है,इस दौरान एचएलएल ने रु. 35668.67 करोड का रिकॉर्ड व्यापारावर्त और रु. 551.81 करोड का कर के पूर्व समग्र लाभ हासिल किया, जो एचएलएल के इतिहास में सर्वोच्च है। एचएलएल ने पिछले वित्तीय वर्ष में रु.3400 करोड का व्यापारावर्त रेखांकित किया।

2. कोविड - 19 महामारी के प्रबंधन की ओर आपातकालीन चिकित्सा वस्तुओं की खरीदी और आपूर्ति के लिए नोडल एजेंसी।

एमओएचएफ्डब्लियु ने 2020 में कोविड-19 का सामना करने के लिए आपातकालीन चिकित्सा उपकरणों का प्रापण करने की ओर एचएलएल को नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया। एचएलएल ने 31 अप्रैल, 2022 तक कुल 18.6 दशलक्ष कवरऑल, 43.6 दशलक्ष एन95 मास्क, 17.3 दशलक्ष चश्मे, 27 दशलक्ष अदद दस्ताने और 22,268 वेंटिलेटरों का प्रापण किया और पूरे भारत के लगभग 185 चिकित्सा संस्थानों में आपूर्ति की गई।

महामारी के दूसरे चरण के दौरान, एचएलएल ने दुनिया भर के विभिन्न देशों और संगठनों से प्राप्त दान और सहायता को हवाई, सड़क या रेल द्वारा 500 से अधिक गंतव्यों तक पहूँचाया। श्री बेजी जोर्ज के सक्रिय दृष्टिकोण और प्रणालियों के कार्यान्वयन ने महामारी के परिणामों को निपटाने के मंत्रालय के प्रयासों को काफी मज़बूत किया है।

3. वेतन पुनरीक्षण का कार्यान्वयन

एचएलएल कर्मचारियों का वेतन संशोधन 14 साल की अवधि के बाद 2022 में लागू किया गया।

4. देशीय विपणन को मज़बूत करते हुए अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय पर ध्यान देना

उनके प्रयासों से नए क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार का विस्तार भी हुआ और आवश्यक स्वास्थ्य रक्षा उत्पादों की आपूर्ति के लिए युएनएफपीए के साथ दीर्घकालिक समझौते पर भी हस्ताक्षर कर सके।

5. सेवा व्यवसाय पर ज़ोर

भारत भर में अत्याधुनिक नैदानिक केंद्रों और प्रयोगशालाओं का नेटवर्क, हिंदलैब्स, अपने नेतृत्व में 285 केंद्रों तक काफी विस्तारित हुआ है, जिनमें से कई ने प्रतिष्ठित एनएबीएल मान्यता प्राप्त की है।

अमृत, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएचएफडब्लियु) की एक अनूठी पहल, जिसका भी देश भर के 200 से अधिक केंद्रों तक बडे पैमाने पर विस्तार किया गया है, जिससे अब तक 468.65 लाख से अधिक मरीज़ लाभान्वित हुए हैं।

6. नए उत्पादों का परिचय

उन्होंने मासिक धर्म कप, जो मासिक धर्म स्वच्छता क्षेत्र में गेम चेंजर था, और एचएलएल के कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास केंद्र द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित ग्राफीन कंडोम सहित नए उत्पादों के लॉन्च की सुविधा भी प्रदान की। श्री बेजी जोर्ज ने व्यावसायीकरण क्षमतावाले विभिन्न भारतीय स्टार्टअप्स से 19 नवीन स्वास्थ्य रक्षा प्रौद्योगिकियों को पहचान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

7. नया पहल

श्री बेजी जोर्ज के नेतृत्व में, एचएलएल ने नये पहल में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल कीं। बॉयलरों में एलएनजी ईंधन में रूपांतरण के फलस्वरूप कार्बन उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी हुई, यानी विशिष्ट ईंधन खपत 2891 लिटर प्रति दशलक्ष अदद से घटकर 2269 किलोग्राम प्रति दशलक्ष अदद हो गई।

इसके अलावा, सौर प्रणालियों के कार्यान्वयन से 1,23,294 विद्युत यूनिटों का उत्पादन हुआ, जिससे लगभग 128 टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में कमी हुई और केएसईबी से बिजली पर 8.4 लाख का औसत मासिक खर्च कम हुआ। श्री बेजी जोर्ज ने पर्यावरण संरक्षण अभियानों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, पौधारोपण एवं प्लास्टिक मुक्त वातावरण का समर्थन करते हुए स्थिरता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की।

श्री बेजी जोर्ज भारतीय रेलवे ट्रैफिक सेवा के 1990 बैच के अतिरिक्त सचिव स्तर के अधिकारी हैं और उनको 30 वर्षों का प्रबंधकीय अनुभव है। एचएलएल में कार्यग्रहण करने से पहले, उन्होंने मुख्य ट्रैफिक योजना प्रबंधक (सीटीपीएम), दक्षिण मध्य रेलवे; निदेशक (योजना), रेलवे बोर्ड; वरिष्ठ महा प्रबंधक, कंटेनर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (कॉनकॉर); महा प्रबंधक एवं सीवीओ, सेंटर फॉर रेलवे इंफर्मेशन सिस्टम (सीआरआईएस), नई दिल्ली और रेलवे में विभिन्न अन्य पदों पर काम किया है। उन्होंने इन सभी संगठनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और अपने करियर के विभिन्न पुरस्कारों के अलावा उन्हें 2011 में प्रतिष्ठित रेल मंत्री का पुरस्कार भी मिला है; उन्हें इंपीरियल कॉलेज, लंदन में परिवहन में स्नातकोत्तर के लिए ब्रिटिश काउंसिल से प्रतिष्ठित शेवनिंग छात्रवृत्ति भी प्राप्त हुआ है। उन्होंने फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज़, नई दिल्ली से एमबीए किया है। उन्होंने अग्रिकल्चरल इंजीनियरिंग इलाहाबाद विश्वविद्यालय से और सोइल एंड वाटर कन्सर्वेशन इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर आईएआरआई, नई दिल्ली से हासिल की थी। वे वर्तमान में श्री चित्रा तिरुनाल इंस्टिट्यूट फॉर मेडिकल साइंसेस एंड टेक्नोलॉजी, तिरुवनंतपुरम से स्वास्थ्य विज्ञान में पीएचडी कर रहे हैं। डॉ.षीना जोर्ज, ईएनटी विशेषज्ञ उनकी पत्नी हैं और उनको सुश्री पल्लवी नाम की एक बेटी है, जो वर्तमान में आईआईएम अहमदाबाद से पीएचडी कर रही है, उनके दामाद, श्री विनय वर्गीस एक सोफ्टवेयर इंजीनियर है।

अजीत.एन
नये निदेशक (विपणन)

श्री अजीत एन को एचएलएल के नये निदेशक (विपणन) के रूप में नियुक्त किया गया है। श्री अजीत एन बिक्री एवं विपणन में 3 दशकों के लंबे अनुभव के साथ पिछले 24 वर्षों से एचएलएल में काम कर रहे हैं। वे वरिष्ठ उपाध्यक्ष - विपणन के पद पर कार्यरत होकर कंपनी के विपणन प्रचालन भी संभालते थे।

उन्होंने वर्ष 2000 में क्षेत्रीय प्रबंधक (उत्तर) के रूप में एचएलएल में कार्यभार लिये और वे उपभोक्ता व्यवसाय प्रचालन, मूड्स कंडोम, उस्ताद कंडोम, सहेली मौखिक गर्भनिरोधक गोलियाँ जैसे विपणन ब्रांडों और सामाजिक विपणन के लिए जिम्मेदार थे। वर्ष 2016 में, उन्हें एचएलएल के नैदानिक सेवा व्यवसाय - हिंदलैब्स के विस्तार और प्रबंधन भी सौंपा गया, जिसमें आज मेडिकल पैथलैब्स एवं इमेजिंग में सार्वजनिक क्षेत्र की कुछ सबसे बडी नैदानिक परियोजनायें हैं। श्री अजीत एन को बीएससी (ऑनर्स) भौतिकी स्नातक और विपणन में एमबीए है। वे एचएलएल में भर्ति होने से पहले बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड में काम करते थे। श्री अजीत के परिवार में उनकी पत्नी श्रीमती अनुपमा, जो बैंगलूर में लेक्चरर है। इनके दो बच्चे हैं, बेटा आयुष किरण, युएक्स डिज़ाइनर, गूगिल और बेटी श्रृष्टि बैंगलूर में पढती है।

एचएलएल - समाचार

डॉ भारती प्रविण पवार, माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार ने 30 अप्रैल 2023 को डिंडोरी, महाराष्ट्र में थिंकल एम कप - मासिक धर्म कप जागरूकता एवं वितरण परियोजना के लिए सीएसआर पहल का लॉच करती हैं। डॉ अनिता तंपी, निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन), एचएलएल भी देखी जाती है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक 09 मई 2023 को पेरूरकडा फैक्टरी में टीम गुणवत्ता सुधार पर कार्यशाला का उद्घाटन करते हैं।

डॉ अनिता तंपी निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन), पेरूरकडा फैक्टरी में 05 अप्रैल 2023 को फैक्टरी दिवस पर ध्वजा फहराती हैं।

सीएचओ में 30 मई 2023 को महिला स्वास्थ्य और ऑस्टियोपोरोसिस विषय पर आयोजित स्वास्थ्य भाषण।

श्री किशोर कुमार मुरलीधरन 20 जून 2023 को पेरूरकडा फैक्टरी में मिगो इको सेफ फोरम द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'नेतृत्व और व्यावसायिकता' पर भाषण देते हैं।

डॉ. अनिता तंपी, निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन) 07 अगस्त 2023 को पेरूरकडा फैक्टरी के कर्मचारियों के बच्चों के लिए ""स्कूल के बाद की सुविधा - नए वाचनालय"" का उद्घाटन करती हैं।

श्री हैबी ईडन, सांसद तालूक अस्पताल, फोर्ट कोच्चि, एर्णाकुलम में संस्थापित होनेवाले नए हिंदलैब्स सूपर स्पेश्यालिटी डायग्नोस्टिक सेंटर की लॉच की घोषणा करते हैं। श्री टी के अशरफ, अध्यक्ष - स्वास्थ्य स्थायी समिति, कोच्चि नगर निगम, श्री एडवोकेट ऑटणी कूरीत्तरा, विपक्ष नेता, कोच्चि नगर निगम और श्री अजीत एन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष (विपणन) को भी देखा जाता है।

श्री नटेश के, कार्यपालक निदेशक (प्रचालन) & यूनिट मुख्य, के एफ बी 27 जुलाई 2023 को ''निधि आप के निकट'' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हैं।

श्रीमती रमा संतोष, अध्यक्षा, त्रिप्पूणित्तरा नगर पालिका 14 अगस्त 2023 को कोचिन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा वित्त पोषित थिंकल एम - कप परियोजना का उद्घाटन करती हैं। श्रीमती मेरी रंजीत अब्राहम, उप महा प्रबंधक - कोचिन शिपयार्ड, श्री राजीव आर वी, महा प्रबंधक (प्रचालन) और यूनिट मुख्य - के एफ सी और अन्य अधिकारीगण भी देखा जाता है।

श्री पी प्रमोद, फैक्टरी एवं बॉयलर्स का निदेशक 29 नवंबर 2023 को सीआरडीसी में आयोजित तीन दिवसीय औद्योगिक सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हैं।

ब्लड बैग उत्पादन और गुणवत्ता आश्वासन विभाग के अधिकारियों एवं कार्यपालकों के लिए 21 दिसंबर 2023 को एएफटी में आयोजित ''प्रीमियम ब्लड बैग वेरिएंट्स की ब्लड बैंकिंग प्रथाएं'' पर इन-हाउस प्रशिक्षण सत्र। डॉ. एस प्रभाकरन, उयिर तुली ब्लड बैंग ग्रूप & अनुसंधान केंद्र के निदेशक ने सत्र का संचालन किया।

प्राइम एक्को सेफ फोरम 20 दिसंबर 2023 को आयोजित कार्यक्रम में श्रीमती निंसी मरियम मोंडली स्वरक्षा और तनाव प्रबंधन पर भाषण देती है।

16 मार्च 2024 को आयोजित वार्षिक योजना कार्यशाला ''अकॉम्प्लिश 2024"' ।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के.बेजी जोर्ज आई आर टी एस चेन्नै में हिनकेयर - के एक नये प्रभाग का लॉच करते हैं।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के.बेजी जोर्ज आई आर टी एस 25 मार्च 2024 को आक्कुलम फैक्टरी में आधुनिकीकृत हाइड्रोसेफालस शंट परियोजना का उद्घाटन करते हैं।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के.बेजी जोर्ज आई आर टी एस 23 मार्च 2024 को नए इंस्टीट्यूशन इंसीनरेटर & डब्लियु एच डी उत्पाद (मग्सीन - डी3), (हिल्कल -एक्स टी) लॉच करते हैं।

पीएफटी के क्षमता एक्को सेफ फोरम द्वारा 04 मार्च 2024 को एलकेजी स्कूल, ऊलमपारा में ड्राइंग किट का वितरण।

महा प्रबंधक (प्रचालन) & यूनिट मुख्य, श्रीमती स्मिता एल जी 05 मार्च 2024 को आरसीसी के रोगियों और बई स्टैंडर्स के लिए फुड किट वान का फ्लॉग ऑफ करती हैं।

माननीय केंद्र स्वास्थ्य सचिव श्री सुधांश पंत ने 03 दिसंबर 2023 को एचएलएल का संदर्शन किया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

गणतंत्र दिवस समारोह

निगमित मुख्यालय

आक्कुलम फैक्टरी

पेरूरकडा फैक्टरी

कनगला फैक्टरी

काक्कनाड फैक्टरी

एचएलएल रिक्रियेशन क्लब

संविधान की अष्टम अनुसूची में विनिर्दिष्ट भाषाएं

1. असमिया	6. गुजराती	11. मराठी	16. मणिपुरी	21. बोडो
2. उड़िया	7. तमिल	12. मलयालम	17. नेपाली	22.डोगरी
3. उर्दु	8. तेलुगु	13. संस्कृत	18. कोंकणी	
4. कन्नड़	9. पंजाबी	14. सिन्धी	19. मैथिली	
5. कश्मीरी	10. बंगला	15. हिंदी	20. संथाली	

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत द्विभाषी रूप में जारी किए जानेवाले दस्तावेज़

1. सामान्य आदेश	General Order
2. संकल्प	Resolution
3. नियम	Rules
4. अधिसूचना	Notification
5. प्रेस संसूचनायें/विज्ञप्तियाँ	Press Communiques/Releases
6. संविदा	Contracts
7. करार	Agreements
8. अनुज्ञप्तियाँ	Licenses
9. अनुज्ञापत्र	Permits
10. सूचना	Notice
11. निविदा प्रपत्र	Forms of Tender
12. निविदा सूचनायें	Tender Notices
13. संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाले शासकीय कागज़ातें	Official Papers to be laid before a House or Houses of Parliament
14. संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक और अन्य रिपोर्टें	Administrative and other reports to be laid before a House or Houses of Parliament

विश्वभाषा के रूप में हिंदी का वर्चस्व

राजभाषा सेमिनार (कॉलेज विद्यार्थियों के लिए) में पुरस्कृत (प्रथम स्थान)

सुश्री गौरी ए एस
एम ए (हिंदी)
एम जी कॉलेज,
तिरुवनंतपुरम

किसी भी देश में "भाषा" हृदय की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ-साथ संस्कृति और सभ्यता की वाहक मानी जाती है। जहाँ तक हिंदी भाषा की बात है तो आज हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ विश्वभाषा भी बन चुकी है। अपनी अस्मिता के कारण हिंदी का विदेशों में भी स्वीकृति होने लगी है। हिंदी किसी क्षेत्र, जाति, धर्म तथा वर्ग की भाषा नहीं है, बल्कि संपूर्ण भारत में समाई हुई राष्ट्रीय एवं सांप्रदायिक सद्भाव की अद्वितीय कड़ी है। कई शताब्दियों से हिंदी का संस्कार होता रहा, और अपने उदारवादी स्वभाव के कारण विदेशों में भी इसका प्रचलन हो रहा है। अतः हिंदी विश्व भाषा है, जिसका सूरज कभी डूबता ही नहीं।

विश्व की भाषाओं में देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी भाषा का मुख्य स्थान है। इतिहास की दृष्टि से देखा जाए तो संस्कृत या तमिल को हमारी राष्ट्रभाषा का पद अलंकृत करना था, लेकिन देश में सर्वाधिक जनता द्वारा बोली, लिखी व पढ़ी जानेवाली भाषा के रूप में हिंदी को हमारी - राष्ट्रभाषा बनने का अधिकार सिद्ध है। वह सपना भारत वर्ष की स्वतंत्रता के सत्तर वर्ष उपरांत भी अधूरा है। विश्व बंधुत्व की भावना से ओतप्रोत 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को हिंदी भाषा ने विश्व व्यापी साकार भी किया है। लगभग दो सौ वर्षों की अवधि में जो भारतीय जनसमुदाय उन्नत आजीविका की तलाश में, विश्व के अनेक देशों में

गए एवं वहाँ बस गए थे, वे अपने साथ में अपनी संस्कृति एवं मातृभाषा भी ले गए, जिसे अब विश्व व्यापी प्रतिष्ठा प्राप्त है।
आज की बात कहें तो संचार साधनों के आगमन से संपूर्ण विश्व एक गाँव बन गया है। वैश्वीकरण एवं बाज़ार वाद के संदर्भ में हिंदी का महत्व इसलिए बढ़ेगा क्योंकि भविष्य में भारत - व्यावसायिक, व्यापारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से एक विकसित देश बन जायेगा।
विश्वभाषा तो विश्व की उस प्रत्येक भाषा को कहा जा सकता है, जिसमें प्रयोक्ता एकाधिक देशों में बसे हुए हैं, किंतु विश्वभाषा पद की वास्तविक अधिकारिणी वे भाषाएँ हैं, जो विश्व के अधिकतर देशों में पढ़ी, लिखी, बोली, सुनी और समझी जाती है। मतलब किसी भी विश्वभाषा के प्रमुख कार्य होते हैं - बोलचाल एवं जनसंपर्क, साहित्य सृजन, शिक्षा एवं जनसंचार माध्यम, प्रशासनिक कामकाज, व्यावसायिक और तकनीकी अनुप्रयोग और विश्वबोध या वैश्विक चेतना।
विश्वभाषा से अपेक्षाएँ होती हैं कि उसे बोलने और समझनेवालों का भौतिक विस्तार हो। आज भारत के बाहर नेपाल, भूटान, सिंगपुर, मलेशिया, सूरीनाम, मौरीशस जैसे अनेक देशों में हिंदी भाषी प्रचुर संख्या में है। दूसरी अपेक्षा है कि वह भाषा लचीली हो, उसमें भिन्न संदर्भों की अभिव्यक्ति की क्षमता हो। उसका एक मान रूप हो, उसमें उप मानकों की कुछ दूर तक स्वीकृति होते हुए भी परस्पर संप्रेषणीयता किसी-न-किसी स्वीकृत मानक के माध्यम से बनी हुई हो और हिंदी में यह गुण भी है।
हिंदी में ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, पहाड़ी, बुंदेली, बघेली, मागधी, छत्तीसगढ़ी और जाने कितनी उपजन भाषाओं के शब्द भंडार, मुहावरे और उसकी लोकोक्तियाँ रच-बस गई हैं। इसके अलावा हिंदी भाषा का भारत की अन्य भाषाओं के साथ शताब्दियों से घनिष्ठ संपर्क रहा है। विश्वभाषा से तीसरी अपेक्षा है कि भाषा में विश्व मन का भाव हो। हिंदी भाषी अपने देश में भी अनेक राज्यों में निवास करने के कारण प्रांतीयता से ऊपर उठा हुआ है और उसके पास ऐसे साहित्य की विशाल परंपरा है, जो विश्व के पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।
हिंदी एक विश्वभाषा है और वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी के प्रति अनेक सकारात्मक प्रवृत्तियाँ भी हैं, जैसे -

- भौगोलिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है, क्योंकि इसके बोलने, समझने वाले संसार के सब महाद्वीपों में फैले हैं।
- जनतांत्रिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है, क्योंकि इसके बोलने समझने वालों की संख्या संसार में तीसरा है।
- हिंदी का किसी देशी या विदेशी भाषा से कोई विरोध नहीं है। अनेक भाषाओं के शब्द ग्रहीत होकर हिंदीमय बन गए हैं। यही कारण है कि आज हिंदी शब्दकोश विश्व का सबसे बड़ा भाषिक शब्दकोश है।
- हिंदी स्वयं में अपने भीतर एक अंतर्राष्ट्रीय जगत को छिपाए हुए हैं। आर्य, द्राविड, आदिवासी, स्पेनी, पुर्तगाली, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेज़ी, अरबी, फारसी, चीनी, जापानी सारे संसार की भाषाओं के शब्द इसकी आंतराचिय मैत्री एवं वसुधैवकुटुम्बकम वाली प्रवृत्ति को उजागर करते हैं।
- इंटरनेट पर हिंदी भी स्वीकार्य और लोकप्रिय हो रही है। हिंदी पत्रकारिता और हिंदी साहित्य भी अब इंटरनेट के माध्यम से विश्वभर में प्रसारित होने लगा है।
- देश विदेशों में प्रकाशित होनेवाले पत्र-पत्रिकाओं ने हिंदी को विश्वभाषा बनाया है। इसके द्वारा हिंदी भाषा और साहित्य का प्रसार विदेश में हुआ है।
- भारत के आकाशवाणी और दूरदर्शन हिंदी को विश्व स्तर पर स्थापित करने में निरंतर कार्यरत है। विश्व के टी वी चैनलों से हिंदी के कार्यक्रमों के प्रसारण ने भी हिंदी को विश्व भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- हिंदी की व्यापकता के कारण दुनिया के एक सौ पचहत्तर (175) देशों में हिंदी के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के अनेक माध्यम केंद्र बन गये हैं। हिंदी का शिक्षण एवं प्रशिक्षण विश्व के लगभग 180 विश्वविद्यालयों, शैक्षणिक संस्थाओं में चल रहा है। इससे हिंदी का वर्चस्व दिनों दिन बढती जा रही है।

भारतीयों के अतिरिक्त, कई विदेशी विद्वानों ने भी हिंदी के प्रति अनुराग प्रदर्शित किया है तथा हिंदी भाषा के विकास में अतुलनीय योगदान दिया है। प्रस्तुत संदर्भ में मॉरिशस, फिजी, ट्रिनिडाड, फ्रांस, इंगलैंड, बेल्जियम एवं रूस आदि विभिन्न छोटे व बड़े देशों के निवासी जैसे जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन, गासा-द-तासी, जॉन

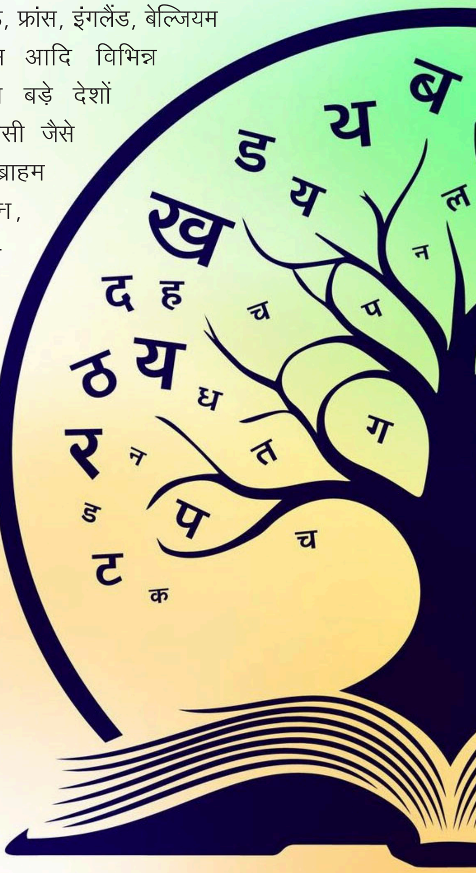

गिलक्रिस्ट, फेड्रिक पिनकट, फा.डॉ.कामिल आदि का नाम अविस्मरणीय व चिर-स्मरणीय रहेगा।
संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में लगभग दो करोड़ से भी अधिक भारतीय रहते हैं। वहाँ प्रवासी भारत वंशियों द्वारा विश्व हिंदी समिति, विश्व हिंदी न्यास, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति जैसी संस्थाएँ संचालित हो रही हैं। समय-समय पर वहाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, कवि सम्मेलनों एवं हिंदी संगोष्ठियों के आयोजन होते रहते हैं। केनड़ा से आज कई हिंदी पत्रिकाएँ प्रकाशित होती है। समाज पत्रिकाओं

में हिंदी टाइम्स, हिंदी अब्रॉड, विश्व भारती, नमस्ते कन्नड़ा, हिंदी चेतना, वसुधा आदि प्रमुख हैं।

दक्षिण अमेरिका के उत्तरी भाग में स्थित सूरीनाम में हिंदी बोलनेवाला दिनों दिन बढ़ रहा है। यहाँ की हिंदी अवधी, मागधी, भोजपुरी, मैथिली के मिश्रण से तैयार हुई भाषा को सरनामी हिंदी का संज्ञा देकर पुकारते हैं। 2003 में 5 जून से 9 जून तक सातवीं विश्व हिंदी सम्मेलन यहाँ संपन्न हुआ था।

ट्रिनिडाड - टुबैगो में हिंदी का बहुत प्रचलन है। यहाँ के टाउन

विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है। पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन यहाँ संपन्न हुआ था।

ब्रिटेन में दो-ढाई सदियों से हिंदी प्रगतिशील है। इटली के वेनिस, टूरिंन, रोम, ओरिएंटल, मिलान विश्वविद्यालयों में हिंदी में शिक्षण हो रहा है। नीदरलैंड्स में लगभग डेढ लाख भारतवंशी हैं। यहाँ हिंदी का ज़ोरदार प्रचलन है। हिंदी परिषद्, हिंदी प्रचार संस्था, लंदन विश्व विद्यालय, हिंदी ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन, डलहिंदी समिति आदि संस्थाओं द्वारा हिंदी की सेवा एवं प्रचार-प्रसार यहाँ हो रहा है।

हिंदी महासागर में अफ्रीका के पूर्व में मेडगासकर तथा उसके पूरब में स्थित मौरीशस द्वीप कोलघु भारतवर्ष माना जाता है। यहाँ की अधिकांश जनता भारत मूल की है। मौरीशस में भारत और मौरीशस की संसदों ने मिलकर हिंदी को विश्वभाषा के रूप में उन्नति प्रदान करने हेतु 13 नवंबर, 2002 को एक अधिनियम के अंतर्गत विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की स्वीकृति दी थी।

इन राष्ट्रों के अलावा जर्मनी पोलेंड, चेक और स्लोवाकिया, बल्यारिया, फिनलैंड, नोर्वे, रूस, जापान, चीन, नेपाल, म्यानमर, श्रीलंका, फीजी, इंडोनेशिया, मलेशिया, दक्षिण आफ्रिका आदि देशों में हिंदी का अत्यधिक प्रचलन है।

वैश्वीकरण तथा भूमंडलीकरण के प्रति हिंदी भाषा का रथ द्रुतगति से चलने लगा है। वर्तमान में ज्ञान-विज्ञान, तकनीक व बाज़ारवाद की दृष्टि से शिथिल होने पर भी अपना अधिकार स्थापित करते हुए हिंदी अग्रसर हो रही है। भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम' ही हिंदी का प्राणतत्व है। विश्व हिंदी सम्मेलनों से पता चलता है कि भारतीय जनमुदाय व भारत शासन तथा विश्व की जनता हिंदी पर कितना प्यार बरसाती है। इंटरनेट के द्वारा हिंदी को विश्वरूप प्रदान करके व्यावसायपरक बनाने का भी प्रयास हो रहा है। विश्वभर के शताधिक विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का शिक्षण, हिंदी के प्रतिष्ठ रचनाकारों व उनकी कृतियों पर शोध कार्य निरंतर संपन्न हो रहे हैं। वैश्वीकरण के युग में हिंदी पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आदान-प्रदान की प्रक्रिया भी हिंदी को विश्व विजयी बनाने में सक्षम करेगी।

हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति देने के लिए विदेश मंत्रालय में 'हिंदी एवं संस्कृत प्रभाग' की गढ़न किया गया है। यह विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न गतिविधियों को संयोजित करता है, यह अपने विदेश में स्थित दूतावासों के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार में जुडी संस्थाओं को हिंदी कक्षाएँ आयोजित करने एवं अन्य गतिविधियों के लिए अनुदान देता है। साथ ही यह विदेशों में अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों का आयोजन भी करता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को प्रतिष्ठित करने के लिए भारतीय संस्कृति संबंध परिषद भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा के दर्जा देने के साथ-साथ इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकृति दिलाने के लिए कुछ ठोस पहल की जाए। हिंदी में यह शक्ति भी आना ज़रूरी है कि वह विश्व के लिए एक ऐसी महत्वपूर्ण भाषा बन जाए, जिसकी उपेक्षा न हो सके। यह तभी होगा जब हमारी मानसिकता बदलेगी। हमें अपनी भाषा बोलते हुए गौरव का अनुभव होगा। जापान, जर्मनी, इंग्लैंड, रूस, फ्रांस, चीन आदि सभी शक्तिशाली देश अपनी भाषा में वक्तव्य देते हैं और अनुवादक के माध्यम से उनकी बात विदेशी श्रोताओं तक पहूँचती है। हिंदी को लेकर भी ऐसे प्रयासों की आवश्यकता है। हिंदी के सामने कई चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक है कि हम वास्तविक स्थिति और अपनी कमियाँ समझे, हमें लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान हो, लक्ष्य प्राप्ति की सार्थक योजनाएँ बने, ईमानदारी तथा दृढता से योजनाओं को कार्यान्वित किया जाए तथा समय-समय पर प्रगति का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

जर्मनी के हिंदी भाषा विद् श्री लोठार लुत्से ने हिंदी के वैश्विक रूप का समर्थन करते हुए सही ही कहा है कि 'हिंदी मध्य देश की भाषा के रूप में दुनिया की सेवा कर सकती है, किंतु हिंदी के साथ अंग्रेज़ी नहीं चल सकती। हम विश्व में हिंदी का समर्थन करते हैं और साथ ही यह भी कामना करते हैं कि हिंदी वाले भी हिंदी को अपनाएँ'। हिंदी को विश्व में अपना स्थान बनाए रखने के लिए हमें मिलकर प्रयास करने की ज़रूरत है।

सुमन प्रभा
वरिष्ठ लिपिक
हाइट्स, नोएडा

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका

हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा का पद दिलाये जाने के संबंध में गाँधीजी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। भारत आते ही उन्होंने जिन आंदोलनों का नेतृत्व किया उनमें हिंदी आंदोलन प्रमुख ही नहीं बल्कि शीर्ष पर रहा। गाँधीजी ने हिंदी को भारतीय स्वतंत्रता की वाणी की संज्ञा दी। स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं का विशिष्ट योगदान रहा। स्वाधीनता आंदोलन में हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी व स्थानीय भाषाओं को जो महत्व दिया व विदेशी भाषा के आधिपत्य को रोकने हेतु जो सजगता दिखाई उसी का परिणाम है कि आज सभी भारतीय भाषाएँ इतनी समृद्ध हैं। स्वतंत्रता आंदोलन भारतीय इतिहास का वह युग है, जो पीड़ा, कड़वाहट, दंभ, आत्मसम्मान, गर्व, गौरव तथा सबसे अधिक शहीदों के लहू को समेट है। स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने-अपने तरीके से बलिदान दिए। इस स्वतंत्रता के युग में साहित्यकार और लेखकों ने भी अपना भरपूर योगदान दिया। अंग्रेज़ों को भगाने में कलमकारों ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई। क्रांतिकारियों से लेकर देश के आम लोगों तक के अंदर लेखकों ने अपने शब्दों से जोश भरा – 'बिना अपनी भाषा या भाषाओं के कोई भी देश गूंगा है। फर्ज कीजिए भारत के हिंदी भाषी प्रदेशों

में सब जगह अंग्रेज़ी फैल जाए, सब अंग्रेज़ी बोलते मिलें, गांव, कस्बे, शहर सब जगह केवल अंग्रेज़ी हो; तो यह देखकर क्या किसी भारत का आभास होगा। क्या इससे भारतीय संस्कृति का अहसास होगा।'

राष्ट्रभाषा शब्द कोई संवैधानिक शब्द नहीं है - बल्कि यह प्रयोगात्मक, व्यावहारिक व जनमान्यता प्राप्त शब्द है। राष्ट्रभाषा सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर पर देश को जोड़ने का काम करती है अर्थात् राष्ट्रभाषा की प्राथमिक शर्त देश में विभिन्न समुदायों के बीच भावनात्मक एकता स्थापित करना है। राष्ट्रभाषा का प्रयोग क्षेत्र विस्तृत और देशव्यापी होता है। राष्ट्रभाषा सारे देश की संपर्क भाषा होती है। इसका व्यापक जनाधार होता है। राष्ट्रभाषा हमेशा स्वभाषा ही हो सकती है क्योंकि उसी के साथ जनता का भावनात्मक लगाव होता है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन ने देशवासियों के भीतर राष्ट्रीय अस्मिता की चाह जगायी थी। राष्ट्रीय अस्मिता का एक अनिवार्य अंग है - राष्ट्रभाषा की अस्मिता। वैसे तो राष्ट्र की सभी भाषाएँ राष्ट्रभाषाएँ हैं किंतु राष्ट्र की जनता जब स्थानीय एवं तात्कालिक हितों एवं पूर्वग्रहों से ऊपर उठकर अपने राष्ट्र की कई भाषाओं में से किसी एक भाषा को विशेष प्रयोजनों के लिए चुनकर उसे राष्ट्रीय अस्मिता एवं गौरव-गरिमा का एक आवश्यक उपादान समझने लगती है तो वही राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय एकता एवं अंतर्प्रांतीय संवाद-संपर्क की आवश्यकता की उपज होती है। संवाद - संपर्क के दो पक्ष है : पहला जनता से जनता के बीच संवाद एवं दूसरा जनता से सरकार के बीच संवाद।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का प्रारंभिक विकास - प्रारंभ से ही हिंदी राष्ट्रभाषा के दोनों दायित्वों का निर्वाह करती रही है। जनता और सरकार के बीच संवाद - स्थापना के क्रम में जब फारसी या अंग्रेज़ी के माध्यम से दिक्कतें पेश हुई तो सरकार ने फोर्ट विलियम कॉलेज में हिंदुस्तानी विभाग खोलकर अधिकारियों को हिंदी सिखाने की व्यवस्था की। यहाँ से हिंदी पढ़े हुए अधिकारियों ने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में उसका प्रत्यक्ष लाभ देखकर मुक्त कंठ से हिंदी को सराहा। हिंदी की सर्वव्यापकता ही वह गुण है जिसने अंग्रेज़ अधिकारियों का ध्यान हिंदी की ओर खींचा। सर्वव्यापकता के साथ-साथ जन-संपर्क में हिंदी की तात्कालिक उपयोगिता ने अंग्रेज़ अधिकारियों को हिंदी व्यवहार के लिए प्रेरित किया। रोबक ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदुस्तानी के प्रयोग के चार क्षेत्रों का निर्देश किया है :

(1) देशी अदालतों की सामान्य भाषा हिंदुस्तानी है,यद्यपि कभी-कभी फारसी का भी प्रयोग होता है।

(2) 'हिंदुस्तानी' में सभी राजनीतिक मसलों पर विचार किया जाता है और अंत में इससे फार्सी में अनुवाद किया जाता है।

(3) मालगुजारी का सारा काम हिंदुस्तानी में होता है।

(4) देशी फौज की आम जबान 'हिंदुस्तानी' है।

हिंदी के बारे में विद्वजनों की राय - 1816 ई. में विलियम केरी ने लिखा कि हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं, बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है। एच.टी. कोलब्रुक की राय थी कि पढ़े-लिखे और अनपढ़ दोनों की साधारण बोलचाल की भाषा हिंदी है जिसे प्रत्येक गाँव में थोडे बहुत लोग समझ लेते हैं। ग्रियर्सन ने हिंदी की चर्चा आम बोलचाल की भाषा (ग्रेट लिंगुआ फ्रैंका) के रूप में की है। इन विद्वानों के मंतव्यों से स्पष्ट है कि हिंदी की व्यावहारिक उपयोगिता, देशव्यापी प्रसार एवं प्रयोगगत लचीलेपन के कारण हिंदी अंग्रेज़ों की कलम एवं जुबान पर चढी। इन्हीं गुणों के कारण कंपनी के सिक्कों पर हिंदी अक्षर और अंक अंकित होते थे। कंपनी के फर्मान भी हिंदुस्तानी में छपते थे। उस समय हिंदी और उर्दू को लेकर कोई विवाद भी नहीं थे। हिंदी, हिंदवी और हिंदुस्तानी को सभी एक ही भाषा मानते थे, जिसकी दो लिपियाँ थीं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने संयुक्त प्रदेश के सदर बोर्ड के एक इश्तहारनामें का हवाला देकर बतलाया है कि सन् 1836 में देवनागरी लिपि वाली हिंदी सरकारी दफ्तरों की भाषा बना दी गई थी, पर मुसलमान भाइयों के विरोध के कारण हिंदी चल नहीं पाई। फलतः 1837 ई. में उर्दू (फारसी लिपि एवं शब्दों वाली हिंदी) दफ्तरों की भाषा बना दी गई। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि अंग्रेज़ों ने हिंदी को प्रयोग में लाकर सही किया।

भूमिका - हिंदी राष्ट्रीय पुनर्जागरण की भाषा थी। अखिल भारतीय स्तर पर जनता का संपर्क सिर्फ हिंदी में ही हो सकता था। ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राम मोहन राय राष्ट्रीय एकता के लिए हिंदी के पक्षधर थे। 1815 में उन्होंने वेदांत सूत्र का हिंदी में अनुवाद किया था। कलकत्ता से 1829 ई. में 'बंगदूत' नामक अखबार निकालने का श्रेय भी उन्हें ही है। केशव चंद्र सेन ने अपने पत्र 'सुलभ समाचार' में 1875 में एक लेख लिखा था- "भारतीय एकता कैसे हो"। फिर स्वयं ही इसका उत्तर देते हुए उन्होंने लिखा था : " उपाय है सारे भारत में एक ही भाषा का व्यवहार और जितनी भाषाएँ भारत में प्रचलित हैं, उनमें हिंदी भाषा लगभग सभी जगह प्रचलित है। यह हिंदी अगर भारत वर्ष की एकमात्र भाषा बनायी जाये, तो यह काम सहज ही, और शीघ्र संपन्न हो सकता है।" ब्रह्मसमाजी नवीन चंद्र राय ने पंजाब में हिंदी के विकास के लिए स्तुत्य योगदान दिया

था। आर्य सामज के संस्थापक दयानंद सरस्वती संस्कृत में ही वाद-विवाद करते थे। गुजराती उनकी मातृभाषा थी और हिंदी का उन्हें सिर्फ कामचलाऊ ज्ञान था, पर अपनी बात अधिक से अधिक लोगों तक पहूँचाने के लिए तथा देश की एकता का ख्याल कर उन्होंने अपना 'सत्यार्थ प्रकाश' हिंदी में लिखा। अरविंद दर्शन के प्रणेता महर्षि अरविंद की सलाह

थी कि 'लोग अपनी-अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए सामान्य भाषा के रूप में हिंदी को ग्रहण करें। थियोसेफिकल सोसाइटी की संचालिका ऐनी बेसेंट कहती थीं "हिंदी जाननेवाला आदमी संपूर्ण भारतवर्ष में यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिंदी बोलने वाले मिल सकते हैं। भारत के सभी स्कूलों में हिंदी की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। इससे लगता है कि राष्ट्रीय समाज सुधारकों की यह सोच बन चुकी थी कि राष्ट्रीय स्तर पर संवाद कायम करने के लिए हिंदी आवश्यक है। भावी राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को बढ़ाने का गुरुतर कार्य इन्हीं समाज-सुधारकों ने किया। हिंदी की व्यापकता देखकर ईसाई मिशनरियों तक ने अपने धर्म-प्रचार के लिए हिंदी को चुना। उनके कई धर्म-ग्रंथ हिंदी में छपे। मतलब यह कि धर्म-प्रचारकों एवं समाज-सुधारकों का मुख्य उद्देश्य तो धर्म-प्रचार था या सामाजिक कुरीतियों का ध्वंस, पर माध्यम के रूप में अपनाए जाने के कारण फायदा हिंदी को मिला।

स्वतंत्रता आंदोलन के क्रम में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का विकास - राष्ट्रीय झंडा एवं राष्ट्रभाषा की संकल्पना भारतीयों के मन में बद्धमूल होती गई। कॉंग्रेस के राष्ट्रीय आंदोलन से जुडे हुए पहले समर्थ व्यक्ति हैं - लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक। कानपुर में जनता द्वारा अपने स्वागत के प्रत्युत्तर में उन्होंने कहा : "यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।" फरवरी 1917 में गाँधीजी हिंदी के प्रश्न को स्वराज का प्रश्न मानते थे। वे गैर हिंदी भाषी पहले और आखिरी सर्वमान्य राष्ट्रीय नेता थे, जिन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में सामने रखकर भाषा-समस्या पर गंभीरता से विचार किया। गाँधीजी ने भी 1917 ई. में भडौंच में आयोजित गुजरात शिक्षा परिषद के अधिवेशन में राष्ट्रभाषा के लिए 5 लक्षण या शर्तें बताई : -

1. अमलदारों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।

2. यह ज़रूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग वह भाषा बोलते हैं।
3. उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का अपनी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार होना चाहिए।
4. राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए।
5. उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्पस्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए।

गाँधीजी के स्वदेशी आंदोलन ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के स्वीकार को सार्वजनिक बनाया। अंग्रेज़ी के विकल्प के रूप में हिंदी सामने आयी। मोतिहारी के किसान आंदोलन के पश्चात् गाँधीजी देश के शीर्षस्थ नेता हो चुके थे। उन्होंने हिंदी को सिद्धांत एवं व्यवहार दोनों स्तरों पर अपनाया। पहले उन्होंने प्रयासपूर्वक हिंदी सीखी, फिर दूसरों को अपनाने की सलाह दी। 1927 में उन्होंने लिखाः "वास्तव में ये अंग्रेज़ी में बोलनेवाले नेता हैं जो आम जनता में हमारा काम जल्दी आगे बढ़ने नहीं देते। वे हिंदी सीखने से इनकार करते हैं जबकि हिंदी द्रविड़ प्रदेश में भी तीन महीने के अंदर सीखी जा सकती है गाँधीजी वैसे नेताओं से परेशान थे जो जनता की बात सबसे अधिक करते थे किंतु राजनीतिक कार्यवाहियों में जनता की उपेक्षा करते थे। भारतीय स्वाधीनता की माँग अंग्रेज़ी भाषा में करने वाले उन्हें ढ़ोंगी लगते थे। सन् 1931 में गांधीजी ने लिखाः "यदि स्वराज्य अंग्रेज़ी पढ़े भारतवासियों का है और केवल उनके लिए है तो संपर्क भाषा अवश्य अंग्रेज़ी होगी। यदि वह करोड़ों भूखे लोगों, करोड़ों निरक्षर लोगों, निरक्षर स्त्रियों, सताए हुए अछूतों के लिए है तो संपर्क भाषा केवल हिंदी हो सकती है।" गाँधीजी जनता की बात जनता की भाषा में करना चाहते थे। किंतु राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के विकास का कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आया। इसका कारण यह था कि महात्मा गाँधी के अलावा प्रायः नेता हिंदी को व्यवहार में उतारने की इच्छा नही रखते थे। जहाँ-तहाँ यदि वे हिंदी का व्यवहार करते थे तो मात्र औपचारिकता के लिए। गाँधीजी की दृष्टि में अंग्रेज़ी का व्यवहार राजनीतिक-सांस्कृतिक गुलामी का परिणाम था। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में सुदृढ करने के लिए उन्होंने वर्धा एवं मद्रास में राष्ट्रभाषा प्रचार सभाएँ स्थापित कीं। उन्हीं की प्रेरणा से विद्यापीठों एवं हिंदी साहित्य सम्मेलनों की ओर से हिंदी में परीक्षाएँ आयोजित की गयीं। गाँधीजी ने हिंदी को अपनाने का एक माहौल बना दिया था। इसी कारण कई राष्ट्रीय हस्तियाँ तन-मन से हिंदी की सेवा में जुट गईं। काका कालेलकर एवं बिनोवा भावे के नाम इस दृष्टि से अग्रगण्य हैं।

कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी भी इसी कड़ी के थे जो राष्ट्रीय एकीकरण के लिए हिंदी को आवश्यक मानते थे। वर्ष 1929 ई. में सुभाषचंद्र बोस ने कहा, "प्रान्तीय ईर्ष्या - द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती। अपनी प्रांतीय भाषाओं की भरपूर उन्नति कीजिए, उसमें कोई बाधा नहीं डालना चाहता और न हम किसी की बाधा को सहन ही कर सकते हैं। पर सारे प्रांतों की सार्वजनिक भाषा का पद हिंदी या हिंदुस्तानी को ही मिला है। चौथे दशक तक हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में आम सहमति प्राप्त कर चुकी थीं। गुजरात के ही सरदार बल्लभ भाई पटेल 1940 में कराची अधिवेशन के अध्यक्ष हुए तो उन्होंने अपना भाषण पहले हिंदी में पढ़ा और बाद में अंग्रेज़ी में। सुभाष चंद्र बोस ने 1918 एवं 1929 में अपना भाषण हिंदी में देते हुए हिंदी को राष्ट्रभाषा के गौरव दिलाने की बात की। क्षिति मोहन सेन हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के अनुष्ठान को राजसूय यंज्ञ की संज्ञा देते थे। बंकिम चंद्र चटर्जी कहते थे कि जो हिंदी भाषा के ज़रिए राष्ट्रीय एकता कायम करने में सफल होगा - वह भारतबंधु कहलाएगा। शताब्दियों तक दक्षिण की भाषाएँ संस्कृत से प्रभावित होती रही हैं। दक्षिण के तीर्थस्थलों में हिंदी ही बात-व्यवहार की भाषा रही है। व्यापार, यातायात, शिक्षा एवं मनोरंजन के साधनों (फिल्म आदि) के कारण भी दक्षिण भारतीयों के लिए हिंदी अपरिचित नहीं रही है। 1927 में सी.राजगोपालाचारी ने दक्षिणवालों को हिंदी सीखने की सलाह दी थी। उन्हीं के शब्द हैं "हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।" रंगनाथ रामचंद्र दिवाकर ने कहा थाः "जो राष्ट्रप्रेमी हैं, उन्हें राष्ट्रभाषा प्रेमी होना ही चाहिए।" अनंत शयनम् आयंगार, कृष्ण स्वामी अय्यर एवं विजय राघवाचार्य हिंदी के बड़े पक्षधर थे। वर्ष 1942 से 1945 का समय ऐसा था जब देश में स्वतंत्रता की लहर सबसे अधिक तीव्र थीं, तब राष्ट्रभाषा से ओत-प्रोत जितनी रचनाएँ हिंदी में लिखी गईं उतनी शायद किसी और भाषा में इतने व्यापक रूप से कभी नहीं लिखी गई। राष्ट्रभाषा प्रचार के साथ राष्ट्रीयता के प्रबल हो जाने पर अंग्रेज़ों को भारत छोड़ना पड़ा। मुख्तसर, ब्रिटिश साम्राज्यवादी हिंदी को आम आदमी की भाषा मानते थे। खड़ी बोली गद्य को पनपाने का श्रेय उन्हें ही जाता है। शुरू में सरकार की नीति हिंदी के पक्ष में थी, पर बाद में उन लोगों ने उर्दू को बीच में लाकर फूट डालना शुरू किया। समाज सुधारकों एवं पत्रकारों ने राष्ट्रीय पुनर्जागरण के लिए माध्यम के रूप में हिंदी को अपनाया और उसे आगे बढ़ाया और उसे राष्ट्रभाषा की गरिमा दी। इस दृष्टि से हमें आवश्यक है, हिंदी हमारी मातृभाषा है इसे गर्व से अपनायें, जहाँ भी जाएं हिंदी में वार्ता करें, ज़रा नहीं शरमाएँ।

कचरे का प्रबंधन

रेखा डी

एस जी 1 (क्यु ए)
आक्कुलम फैक्टरी

कचरे से होनेवाली स्वास्थ्य समस्याएं आज गाँवों और शहरों के लिए एक अंतहीन समस्या है। स्वच्छता आसपास के क्षेत्र के लोगों के संस्कार का हिस्सा है। पर्यावरण की रक्षा और हमारे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए अपशिष्ट प्रबंधन दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू होना चाहिए। जनसंख्या प्रतिदिन बढ़ रही है और कचरा उत्पादन की कोई सीमा नहीं हैं। संभावित नकारात्मक प्रभावों पर विचार किए बिना, हम या तो कचरे को जला देते हैं या इसे कहीं भी फेंक देते हैं, जहाँ इसका कोई उचित निपटान का विकल्प नहीं होता है।

सभी घरेलू, औद्योगिक और फैक्टरी कचरे का उचित प्रबंधन किया जाना चाहिए। अन्यथा इसके परिणामस्वरूप कई पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संबंधी खतरे हो सकते हैं। इस प्रकार हमें अपशिष्ट पदार्थ संग्रह छंटाई परिवहन और निपटान के कुशल साधनों की आवश्यकता है। हम पर्यावरण क्षरण को कम कर सकते हैं और कचरे का उचित प्रबंधन करके लोगों और अन्य सभी जीवजंतुओं की सुरक्षा और कल्याण की रक्षा कर सकते हैं। जैसे - जैसे अधिक व्यक्ति पुनचक्रण और कचरे का पुनः उपयोग करेंगे वैसे -वैसे अपशिष्ट उत्पादन में भी कमी आएंगे।

रेफियूज़, रीयूज़, रेडियूज़ और रिसाइकिल कचरा प्रबंधन के मूल सिद्धांत हैं। अपशिष्ट प्रबंधन में मुख्य रूप से कचरे प्रभावी ढंग से इकट्टा करना और उसका निपटान करना शामिल है। इस प्रक्रिया में कचरे का सही तरीके से प्रबंधन करना उत्पादित कचरे को रिसाइकिल करना और यहाँ तक कि जहाँ संभव हो तो कचरे को मूल्यवान नवीकरणीय ऊर्जा में बदलना शामिल है।

अपशिष्ट प्रबंधन, पृथ्वी एवं ग्रह की रक्षा के लिए नगरपालिका राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई देशों द्वारा शूरू की गई वर्तमान परियोजनाओं में से एक है। यह सावधान कार्रवाई वर्तमान और आने वाली पीढियों के लिए एक अच्छा और स्थिर वातावरण बनाने में योगदान देती है। भारत में ज्यादातर जानवर सडकों पर कचरा खाने के बाद दम घुटने से मर जाते हैं।

अनुचित अपशिष्ट निपटान के परिणामस्वरूप मानव और पशु सहित अनेक जीवों की जान पहले ही जा चुके है। कचरे से छुटकारा पाने के कई तरीके हैं, जैसे कंपोस्टिंग, लैंडफिल, रिसाइक्लिंग और अन्य बहुत कुछ, जो पर्यावरण को नुकसान पहूँचाए बिना कचरे से छुटकारा पाने में मदद करते हैं। अपशिष्ट प्रबंधन पर्यावरण को संरक्षित

करने और आसपास के इलाकों के लोगों और जानवरों की रक्षा के लिए मदद करता है। लोगों को स्वयं प्रेरित होकर और सतर्कता से दैनिक कार्यों में भाग लेकर अपशिष्ट प्रबंधन में भी भाग लेना चाहिए।

आप जो कर सकते हैं उसे मना करें, जो आप कर सकते हैं उसे कम करें, जो आप कर सकते हैं उसका पुनःउपयोग करें, जो आप कर सकते हैं उसे रीसाइकिल करें बाकी को बेकार जाने दें। कुशल अपशिष्ट प्रबंधन आज की दुनिया में आवश्यक है। जनसंख्या वृद्धि के कारण कचरा हर दिन बढ रहा है। कचरे के बढने से काफी लोगों के स्वास्थ्य पर भी उसका असर पड़ रहा है। उदाहरण के लिए जो झुगी - झोपडियों में रहते हैं वहाँ कचरा बहुत होते हैं। ऐसे में उन्हें कई तरह की बीमारियों का खतरा रहता है। स्वास्थ्य जीवन जीने के लिए अच्छी स्वच्छता और साफ सफाई की आवश्यकता होती है। इसलिए यह केवल कुशल अवशिष्ट प्रबंधन के साथ ही पूरा किया जा सकता है।

अपशिष्ट प्रबंधन से लाभ

1. कचरे से ज्यादा बदबू आता है, जो पर्यावरण के लिए हानिकारक है। इसलिए स्वच्छ पर्यावरण के लिए कचरे का प्रबंधन आवश्यक ही है।
2. पर्यावरण के विनाश का मुख्य कारक अपशिष्ट है, इसलिए पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए कचरे का प्रबंधन अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त यह शहर की स्वच्छता में सुधार लाता है जिससे निवासियों को रहने के लिए स्वच्छ वातावरण मिलता है।
3. अपशिष्ट का पुनचंक्रमण कचरा कम करने का फलदायक तरीका है। पुनचंक्रमण से कचरा नया चीज़ बन जाती है।
4. अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली के लिए श्रमिकों की आवश्यकता होती है, इससे बहुत से लोगों को काम मिलता है।
5. ऊर्जा बनाने के लिए कई अपशिष्ट पदार्थों का भी उपयोग किया जा सकता है, कुछ जैविक वस्तुओं का उपयोग उर्वरकों के रूप में भी किया जा सकता है परिणामस्वरूप मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि हो सकती है।

अपशिष्ट प्रबंधन का तरीका

1. पुनचंक्रमण : कचरे का पुनचंक्रमण सबसे अच्छा तरीका है। यह अपशिष्ट प्रबंधन के लिए बेहत फायदेमद्द है। जिन वस्तुओं को फेंक देते हैं उनका पुनः उपयोग ही पुनचंक्रमण है। पुनचंक्रमण कचरे को मूल्यवान संसाधनों में बदलने की प्रक्रिया में मदद करता है।
2. लैंडफिलिंग : अपशिष्ट प्रबंधन के लिए सबसे लोक प्रिय तरीका लैंडफिलिंग है। कचरे को दफनाने के लिए मिट्टी के बडे छेद खोदे जाते हैं जिसे बाद में मिट्टी की परत से ढक दिया जाता है।
3. कंपोस्टिंग : कंपोस्टिंग की प्रक्रिया में जैविक कचरे को उर्वरकों में बदलना शामिल है। इस तरीके से धरती को और उपजाऊ बनाया जाता है। यह पौधों के उगने में सहायक होता है। अपशिष्ट प्रबंधन के कुशल परिवर्तन से परिस्थिति को भी लाभ मिलता है।

वास्तव में कचरा मुक्त पर्यावरण हमारी संस्कृति का एक हिस्सा बनना चाहिए, इसके लिए हमें खूब परिश्रम करना चाहिए।

हिंदी बोले और लिखे जाने के आधार पर देश के राज्यों का विभाजन।

क्षेत्र 'क'	REGION 'A'
बिहार	BIHAR
झारखण्ड	JHARKHAND
हरियाणा	HARYANA
हिमाचल प्रदेश	HIMACHEL PRADESH
छत्तीसगढ़	CHATTISGARH
मध्य प्रदेश	MADHYA PRADESH
राजस्थान	RAJASTHAN
उत्तर प्रदेश	UTTAR PRADESH
उत्तरांचल	UTTARANCHAL
अंडमान और निकोबार द्वीप	ANDAMAN & NICOBAR ISLANDS
दिल्ली के संघ राज्य क्षेत्र	UNION TERRITORY OF DELHI
क्षेत्र 'ख'	**REGION 'B'**
गुजरात	GUJARAT
महाराष्ट्र	MAHARASHTRA
पंजाब	PUNJAB
चंडीगढ़	CHANDIGARH
&	&
संघ राज्य क्षेत्र	UNIONTERRITORIES OF
दामन ड्यू	DAMAN DUE
दादर & नगरहवेली	DADAR & NAGARHAVELI
क्षेत्र 'ग'	**REGION 'C'**
असम	ASSAM
आंध्रा प्रदेश	ANDRA PRADESH
उड़ीसा	ORISSA
कर्नाटका	KARNATAKA
केरल	KERALA
जम्मू & कश्मीर	JAMMU & KASHMIR
तमिल नाडु	TAMIL NADU
त्रिपुरा	TRIPURA
नागालैण्ड	NAGALAND
पश्चिम बंगाल	WEST BENGAL
मणिपुर	MANIPUR
मेघालय	MEGHALAYA
सिक्किम	SIKKIM
मिज़ोराम	MIZORAM
गोवा	GOA
अरुणाचल प्रदेश	ARUNACHAL PRADESH
&	&
संघ राज्य क्षेत्र	UNIONTERRITORIES OF
पुतुच्चेरी	PUDUCHERRY
लक्षद्वीप	LEKSHADWEEP

नेमी टिप्पणियाँ

Approved	अनुमोदित
As Proposed	यथा प्रस्तावित
Draft for approval	अनुमोदनार्थ प्रारूप
Expedite action	कार्रवाई शीघ्र करें
Follow up action	अनुवर्ती कार्रवाई
For approval	अनुमोदनार्थ
For compliance	अनुपालन के लिए
For consideration	विचारार्थ
For kind information	सदय जानकारी के लिए
For necessary action	आवश्यक कार्रवाई के लिए
For perusal	अवलोकनार्थ
For signature	हस्ताक्षर के लिए
Passed for payment	भुगतान के लिए पारित
Please check	कृपया जाँच करें
Please circulate	कृपया परिचालित करें
Please discuss	कृपया चर्चा करें
Please expedite compliance	शीघ्र अनुपालन कीजिए
Please file	कृपया फाइल करें
Please do the needful	कृपया आवश्यक कार्रवाई करें
Please see	कृपया देखें
Please speak	बात कीजिए
Please brief	कृपया संक्षिप्त करें
Put up for perusal	अवलोकनार्थ प्रस्तुत
Reply may be drafted	उत्तर का मसौदा तैयार किया जाय
Sanction may please be accorded	कृपया मंजूरी दी जाय
Seen, thanks	देख लिया, धन्यवाद
Seen and returned	देखा और वापस किया
Very urgent	अति तत्काल

एचएलएल शब्दावली

P.F. contribution	भविष्य निधि योगदान
Packing	पैकिंग
Packing materials	पैकिंग सामग्री
Paid up capital	प्रदत्त पूँजी
Pamphlet	पुस्तिका
Parliament	संसद
Participant	प्रतिभागी
Participatory	सहयोगात्मक
Particular	विवरण
Partner	साझेदार
Partnership	भागीदारी
Partnership deed	साझा-पत्र
Part-time	अंशकालिक
Passed by	पास कर्ता
Patron	संरक्षक
Pay	वेतन
Pay bill	वेतन बिल
Pay fixation	वेतन नियतन
Pay roll	वेतन पत्रक
Pay slip	वेतन पर्ची
Payable	देय
Payee	प्राप्तकर्ता
Payer	भुगतानकर्ता
Paying authority	भुगतान प्राधिकारी
Payment	भुगतान
Payment Terms	भुगतान की शर्तें
Pecuniary advantage	आर्थिक लाभ
Pen drive	पेन ड्राइव

एचएलएल शब्दावली

Penalty	दंड
Pending	लंबित
Pension	पेंशन
Performance	निष्पादन
Performance appraisal	मूल्य निर्धारण
Performance certificate	निष्पादन प्रमाणपत्र
Performance evaluation	निष्पादन मूल्यांकन
Performance Guarantee	निष्पादन गारंटी
Performance of duty	कर्तव्य पालन
Performance register	निष्पादन रजिस्टर
Performance Security	निष्पादन सुरक्षा
Period	अवधि
Periodic review	आवधिक समीक्षा
Periodical	सामयिक/आवधिक
Permanent	स्थायी
Permanent appointment	स्थायी नियुक्ति
Permanent post	स्थायी पद
Permission	अनुमति
Permission slip	अनुमति पर्ची
Permitted	अनुमत
Perquisites	अनुलब्धियाँ
Person	व्यक्ति
Personal friend	व्यक्तिगत मित्र
Personal pay	वैयक्तिक वेतन
Personnel	कार्मिक
Personnel function	कार्मिक कार्य
Perusal	अवलोकन
Petition	याचिका

मंत्रालयों के नाम

Ministry of Agriculture	-	कृषि मंत्रालय
Ministry of Chemical & Fertilizers	-	रसायन एवं ऊर्वरक मंत्रालय
Ministry of Civil Aviation	-	नागर विमानन मंत्रालय
Ministry of Coal & Mines	-	कोयला एवं खान मंत्रालय
Ministry of Commerce and Industry	-	वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय
Ministry of Communications	-	संचार मंत्रालय
Ministry of Company Affairs	-	कंपनी कार्य मंत्रालय
Ministry of Consumer Affairs & Public Distribution	-	उपभोक्ता कार्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय
Ministry of Culture	-	संस्कृति मंत्रालय
Ministry of Defence	-	रक्षा मंत्रालय
Ministry of Environment and Forests	-	पर्यावरण और वन मंत्रालय
Ministry of External Affairs	-	विदेश मंत्रालय
Ministry of Finance	-	वित्त मंत्रालय
Ministry of Food Processing Industries	-	खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय
Ministry of Health & Family Welfare	-	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
Ministry of Heavy Industry & Public Enterprise	-	भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम मंत्रालय
Ministry of Home Affairs	-	गृह मंत्रालय
Ministry of Human Resource Development	-	मानव संसाधन विकास मंत्रालय
Ministry of Information and Broadcasting	-	सूचना और प्रसारण मंत्रालय
Ministry of Information Technology	-	सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
Ministry of Labour & Employment	-	श्रम तथा रोज़गार मंत्रालय
Ministry of Law and Justice	-	विधि एवं न्याय मंत्रालय
Ministry of Non-Conventional Energy Sources	-	अपारंपरिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय
Ministry of Overseas Indian Affairs	-	प्रवासी भारतीय (कार्य) मंत्रालय
Ministry of Panchayati Raj	-	पंचायती राज मंत्रालय
Ministry of Parliamentary Affairs	-	संसदीय कार्य मंत्रालय
Ministry of Personnel, Public Grievances and Pension	-	कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय
Ministry of Petroleum and Natural Gas	-	पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय
Ministry of Power	-	विद्युत मंत्रालय
Ministry of Railways	-	रेल मंत्रालय
Ministry of Road Transport & Highways	-	सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय
Ministry of Rural Development	-	ग्रामीण विकास मंत्रालय
Ministry of Science & Technology	-	विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय
Ministry of Shipping	-	जहाजरानी मंत्रालय, नौपरिवहन मंत्रालय
Ministry of Small Scale Industries, Agro and Rural Industries	-	लघु उद्योग एवं कृषि तथा ग्रामीण उद्योग मंत्रालय
Ministry of Social Justice & Empowerment	-	सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय
Ministry of Statistics and Programme Implementation	-	सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय
Ministry of Steel	-	इस्पात मंत्रालय
Ministry of Textiles	-	वस्त्र मंत्रालय
Ministry of Tourism	-	पर्यटन मंत्रालय
Ministry of Tribal Affairs	-	जनजातीय कार्य मंत्रालय
Ministry of Urban Development & Poverty Alleviation	-	शहरी विकास एवं गरीबी उन्मूलन मंत्रालय
Ministry of Water Resources	-	जल संसाधन मंत्रालय
Ministry of Youth Affairs & Sports	-	युवाकार्य और खेल मंत्रालय

एचएलएल ऑप्टिकल्स

एचएलएल का एक पहल, भारत सरकार का उद्यम

सरकारी नेत्र अस्पताल, तिरुवनंतपुरम, दूरभाष : 0471 2306966

आप का समय ।
आप का स्थान ।
आप का मूड्स ।
MOODS
All Night
मूड्स रातभर कंडोम
मूड्स
कंडोम